CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

8.2

शिवपुराण

एवं

ओङ्कारोपासना

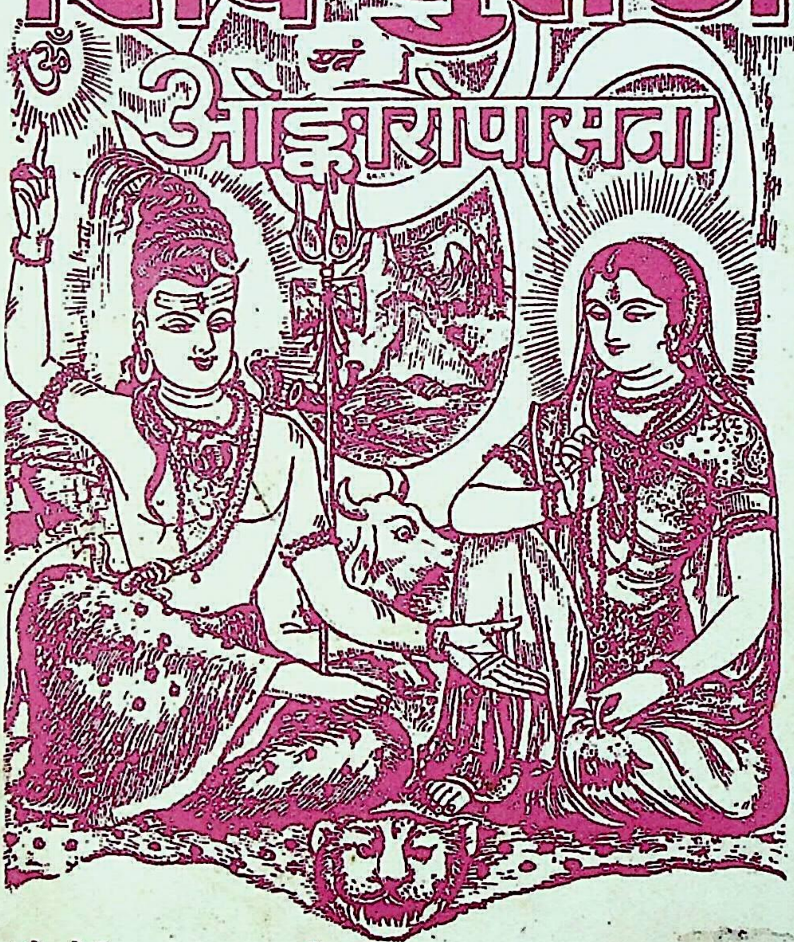

'हे देवि! प्रणव अर्थ परिज्ञानम् एव ज्ञानं सदा

-महर्षि ओङ्कारानन्द सरस्वती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिवपुराण एवं ओङ्कारोपासना

ॐ

(संशोधित तथा तालिका एवं चित्र सहित)

लेखक

योगिराज महर्षि ओंङ्कारानन्द सरस्वती

ॐ पूर्णात् पूर्णम् उदच्यते पूर्णम् पूर्णेन सिच्यते

प्रकाशक

महर्षि ओंकारानन्द प्रणव-मन्दिर समिति, प्रकाशन-विभाग

ओंङ्कार-आश्रम

ग्राम : बैजनाथपुर, पत्रालय : बालापार, गोरखपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशक

महर्षि ओंकारानन्द प्रणव-मन्दिर समिति
प्रकाशन-विभाग
ओंङ्कार-आश्रम
ग्राम-बैजनाथपुर, पत्रालय : बालापार, गोरखपुर

(सर्वाधिकार लेखक द्वारा सुरक्षित)

- ब्रह्मलीन पूज्य महर्षि ओंकारानन्द सरस्वती जी
के कमल चरणों में सादर समर्पित

मुद्रक : के० पी० प्रिन्टर्स, माया बाजार, गोरखपुर

मूल्य : 20/-

ज्ञातव्य - महर्षि ओंकारानन्द सरस्वती जी द्वारा रचित श्रेष्ठ वैदिक तथा आध्यात्मिक ग्रन्थों को भी उपर्युक्त प्रकाशन के द्वारा प्राप्त करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

ज्ञातव्य

जो सज्जनवृन्द ओङ्कार–आश्रम से सम्बन्ध रखते हैं, उन्हें यह ज्ञात है कि पूज्यपाद श्री महर्षि ओङ्कारानन्द जी सरस्वती के जन्म–दिवस (२०,फरवरी) के अवसर पर, उनके द्वारा लिखित एक ग्रन्थ, प्रकाशन–विभाग की ओर से, जनता जनार्दन की सेवा के लिए, अवश्य प्रकाशित किया जाता है। इस नियम को प्रकाशन–विभाग की ओर से सावधानी के साथ पालन किया जाता है।

पूज्य श्री महर्षि जी द्वारा रचित **"शिवपुराण में ओङ्कारोपासना"** नामक पुस्तक की मांग को देखकर श्री महर्षि जी ने इस पुस्तक के दूसरे संस्करण में, शिवपुराण के विशेष अध्ययन के आधार पर, शिव–भक्तों के लिए, कई नवीन पृष्ठ युक्त करके सोना में सुगन्ध पैदा कर दिया था यह महत्वपूर्ण ग्रन्थ प्रातः स्मरणीय श्री महर्षि जी के जन्म–दिवस २०, फरवरी सन् १९७९ ई० के अवसर पर नियमानुसार, आपकी सेवा में सादर समर्पित किया गया था। दूसरे संस्करण में चित्रों एवं तालिका को दे देने से पुस्तक के नवीन तथा गहन–विषय सुस्पष्ट हो गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
दूसरा संस्करण समाप्त हो गया था। इसलिए यह तीसरा संस्करण आपकी सेवा में सादर प्रस्तुत है। पाठकगण इसके अध्ययन से विशेष आध्यात्मिक लाभ उठावेगें।

प्रणव प्रेमी तथा ब्रह्मलीन पूज्यपाद् महर्षि जी के परम भक्त श्री अनिल कुमार श्रीवास्तव ने अपने पूज्य पिताजी स्व० श्री चन्द लाल की पुण्यस्मृति में इस पुस्तिका को मुद्रित कराने का पूर्ण व्यय धनराशि दान स्वरूप दिया है। उन्हें हार्दिक धन्यवाद !

जन्मदिवस : २०, फरवरी २००७ ई०

निवेदक :

महर्षि ओंकारानन्द प्रणव–मन्दिर समिति

प्रकाशन–विभाग

ओङ्कार–आश्रम

ग्राम : बैजनाथपुर, पत्रालय : बालापार, गोरखपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्व० श्री चन्द्र लाल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रथम संस्करण के सम्बन्ध में-

दो शब्द

श्रद्धालु पाठकों के समक्ष "शिव–पुराण में ओङ्कारोपासना" नामक पुस्तिका उपस्थित है। इधर पिछले कुछ दिनों से शिव–पुराण का स्वाध्याय करते समय, ओङ्कार के सम्बन्ध में, जो जनकल्याणार्थ सामग्रियाँ शिवपुराण से प्राप्त हो सकीं उनको संगृहीत कर दिया गया है। इस छोटी सी पुस्तिका से, आशा है कि उन लोगों के भ्रम का निवारण हो जायेगा जो ओङ्कारोपासना को केवल निराकार उपासना समझते और बतलाते हैं।

शिव–पुराण के अध्ययन से प्रणव–विद्या के सम्बन्ध में प्रचुर मात्रा में ज्ञान की उपलब्धि हुई है। इस भाग–दौड़ के उपस्थित–वातावरण में, शिव–पुराण जैसे बृहद् ग्रन्थ का अध्ययन करने के लिए समय निकालना अधिकांश लोग सम्भव नहीं समझते हैं। सच तो यह है कि किसी पुस्तक का मूल रूप में ही अध्ययन करने से पूर्ण तृप्ति तथा आनन्द प्राप्त होता है परन्तु जो नर–नारी समय निकालकर गम्भीर अध्ययन करने को तैयार नहीं है, उन्हें इस पुस्तिका को अवश्य ही न केवल पढ़ना ही चाहिए अपितु इस पर मनन करके ओङ्कारोपासना रूप साधना को भी शीघ्र ही आरम्भ कर देना चाहिए। **इस अति लघुकाय पुस्तिका में केवल प्रणव के सम्बन्ध में ही, शिव–पुराण के आधार पर लिखने का प्रयास किया गया है।** जो मुख्य विषय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हैं उनको विषय सूची में संकेत कर दिया गया है तथा पुस्तिका के अन्त में, इस सम्पूर्ण पुस्तिका का भी सारांश पाठकों की सुविधा के लिए दे दिया गया है।

इस पुस्तिका को मुद्रित कराने का पूर्ण व्यय उदार–हृदय, प्रणव प्रेमी श्री ठाकुर रामप्रताप सिंह (स्पेशल असिस्टेन्ट, पंजाब नेशनल बैंक, गोरखपुर) ने अपने सात्विक दान के द्वारा दिया है। इसलिए उन्हें हार्दिक धन्यवाद दे रहा हूँ।

अब सभी शिक्षित धर्म–प्रेमी, ज्ञानी–जनों से प्रार्थना है कि इस पुस्तिका के अध्ययन से स्वयं लाभ उठावें तथा दूसरे लोगों को भी लाभान्वित करायें।

आपका हितार्थिन

स्वामी ओंकारानन्द सरस्वती

प्रणव मन्दिर–ओङ्कार–आश्रम

ग्राम : बैजनाथपुर, पत्रालय : मानीराम, गोरखपुर

माघ पूर्णिमा, सं० २०२६ वि०।

२१.०२.७० ई०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्वितीय संस्करण के सम्बन्ध में-

निवेदन

"शिवपुराण में ओङ्कारोपासना" नामक ग्रन्थ का प्रथम संस्करण लगभग आठ वर्ष पूर्व प्रकाशित हुआ था। पिछले आठ वर्षों मैं हजारों नर–नारियों का यह भ्रम दूर हो गया कि ओङ्कारोपासना केवल निराकार उपासकों के लिए है। इस धारणा का प्रबल प्रमाण यह है कि पिछले कई वर्षों में, भगवान् ओङ्कारेश्वर की उपासना सैकड़ों गृहस्थ नर और नारियों के यहाँ की और कराई गई जो प्रणव–मन्दिर के शिष्य नहीं हैं। इस प्रचार के द्वारा भगवान् शिव का "ओम्" के साथ जो अभेद है उसका पता लोगों को लग गया है। यह बात भी भक्तों ने जान ली कि शिवपुराण का मुख्यरूप से प्रतिपाद्य विषय ओङ्कार ही है जिसे न केवल शिव के पुत्र और ऋषि–मुनियों ने ही प्रत्युत स्वयं भगवान् शङ्कर ने भी उपदेश दिया है।

उपर्युक्त प्रथम संस्करण की भूमिका के रूप में जो "दो शब्द" मेरे द्वारा लिखे गये हैं, उसमें स्पष्ट रूप से इन शब्दों में, मैनें पाठकों को जानकारी करा दी है — "इस अति लघुकाय पुस्तिका में केवल प्रणव के सम्बन्ध में ही, शिवपुराण के आधार पर लिखने का प्रयास किया गया है।" केवल ओङ्कार के सम्बन्ध में लिखे जाने के कारण उस प्रथम पुस्तिका की पृष्ठ संख्या ३९ थी। परन्तु इस दूसरे संस्करण की पृष्ठ संख्या ५७ है। अत: १८ पृष्ठों की जो वृद्धि हुई है उसका कारण यह है कि इस ग्रन्थ के आरम्भ में भगवान् ओम् शङ्कर के उपासकों के लिए उन अत्यन्त महत्वपूर्ण ज्ञातव्य बातों पर संक्षेप में प्रकाश डाल दिया गया है जिनकी जानकारी आवश्यक है, जैसे कि — शिवपुराण का परिचय, शिवलिङ्ग के क्रम का वर्णन, बन्धन और मोक्ष, रूद्राक्ष धारण के सम्बन्ध में, लोकों में शिवलोक की स्थिति तथा भगवान् शिव की पूजा के लिए पाँच वैदिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मंत्र इत्यादि। इन नवीन विषयों के अध्ययन से भगवान् ओङ्कारेश्वर और भगवान् शिव की एकता और अधिक रूप से सिद्ध होगी। शिव–उपासक और ओङ्कार–उपासक में कोई भेद नहीं है,ण यदि कुछ अन्तर है तो बस इतना ही कि भगवान् शिव के सहस्त्रों नामों में ओम् नाम जो सबसे श्रेष्ठ माना गया है उसी को ओङ्कार–उपासक मुख्य रूप से अपनाते हैं।

प्रथम संस्करण की भूमिका को हटा देना उचित न समझकर उसे भी ज्यों का त्यों इस नवीन ग्रन्थ में रख दिया गया है। इस द्वितीय संस्करण के प्रकाशन से प्रेमी भक्तजनों को 'शिवतत्व'' को विस्तार से जानने का अवसर प्राप्त होगा – इसमें शङ्का नहीं। भगवान् शिव के शब्दों में ही – **''प्रणवार्थ परिज्ञानम् एव ज्ञानं मदात्मकम्''** अर्थात् 'हे गौरी ! ओङ्कार का ज्ञान ही मेरा सच्चा ज्ञान है'' – इस बात को उपासक गण स्वीकार करेंगे और ओङ्कारोपासना के द्वारा अपना परम कल्याण करेंगे।

इस नवीन संस्करण की दूसरी विशेषता यह भी है कि इसमें लिखित विषयों को सुस्पष्ट करने के लिए भावपूर्ण चित्र और तालिका भी दे दिये गये हैं। इस पुस्तक को श्री देशराज जी श्रीवास्तव, कैटरिङ्ग मैनेजर, उत्तरी रेलवे, दिल्ली ने अपने स्वर्गीय पिता और माता श्री मनोहर लाल जी तथा श्रीमती जनक दुलारी जी की पुण्य स्मृति में आर्थिक दान देकर मुद्रित करवाया। इस उदारता के लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं।

निवेदक

स्वामी ओंकारानन्द सरस्वती

ओङ्कार–आश्रम

ग्राम : बैजनाथपुर, पत्रालय : बालापार, गोरखपुर

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा, सं० २०३५ वि०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

विषय-सूची

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
१.	ओम् तथा शिव की एकता	१
२.	भगवान् ओम् शिव को नमन	१
३.	वेद तुल्य शिवपुराण का परिचय	१
४.	भगवान् ओङ्कारेश्वर शिव के भक्तों के लिए	
	कुछ ज्ञातव्य बातें :—	३
	(क) शिवलिङ्ग के क्रम का वर्णन	३
	(ख) विभूति	६
	(ग) बन्धन और मोक्ष	८
	(घ) शिव की कृपा से नाना प्रकार की मुक्तियों की प्राप्ति	९
	(ङ) शिव शब्द का अर्थ	१०
	(च) भिक्षा का अन्न और शिवभक्त	११
	(छ) रूद्राक्ष धारण के सम्बन्ध में	११
	(ज) तीन प्रकार के शिवयोगी तथा जप—यज्ञ का महत्व	१३
	(झ) लोकों में शिवलोक की स्थिति	१४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
	(ञ) धर्म और अधर्म से प्राप्त धन तथा दान	१६
	(ट) शिवलिङ्ग का सच्चा स्वरूप	१७
	(ठ) भगवान् शिव की पूजा के लिए पाँच वैदिक मंत्र	१७
५.	शिवकथित उनके दो स्वरूप	१८
६.	शिवजी के पाँच कृत्य तथा ओम् और पंञ्चाक्षर मंत्र की महिमा	१९
७.	ओम् ही सबका मूल कारण है	२०
८.	ऋषियों द्वारा ओङ्कार सम्बन्धी जिज्ञासा तथा व्यासदेव जी का उत्तर	२३
९.	ओङ्कार के सम्बन्ध में पार्वती जी का प्रश्न	२६
१०.	ओङ्कार के सम्बन्ध में शङ्कर जी का उत्तर	२७
११.	ओङ्कार का कलाओं के साथ सम्बन्ध	३०
१२.	पार्वती जी के कुछ शेष प्रश्नों का उत्तर	३०
१३.	प्रणव से भव ताप का नाश – व्यास जी के उपदेश की समाप्ति	३३
१४.	शिव जी के अन्य मुख्य आठ नामों का अर्थसहित परिचय	३४
१५.	भगवान् शिव के सभी नामों में ओम् नाम की श्रेष्ठता	३६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
१६.	प्रणव ही मन्त्राधिराज है	३८
१७.	काशी में मरने वालों की मुक्ति ओम् नाम से ही होती है	३८
१८.	प्रणव के विषय में स्कन्द जी का उपदेश	४०
१९.	स्कन्द जी के द्वारा ओङ्कार के छः प्रकार के अर्थों पर प्रकाश डालना	४२
२०.	शिव–पद के अधिकारी कौन ?	४७
२१.	ओङ्कार के सम्बन्ध में कुछ अन्य आदेश	४८
	(१) गायत्री मंत्र से पूर्व ओम् मंत्र का जप करना आवश्यक है	४८
	(२) साधारण लोगों के लिए आदेश	४९
	(३) सन्यासियों के लिए आदेश	४९
	(४) शिवभक्तों को ओङ्कार उपासना करनी चाहिए	५०
	(५) प्लुत लक्षण वाला ओङ्कार ही प्रथम नाद है	५०
	(६) रूद्रदेव का ज्ञान केवल एकाक्षर 'ॐ' से ही सम्भव है	५१
	(७) ओङ्कार में त्रिदेव	५१
	(८) ओङ्कार तथा शङ्कर जी का शरीर	५२
	(९) ओङ्कार के द्वारा साकार शिव की पूजा	५३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
	(१०)ओम् का ध्यान	५५
	(११) ओम् के उच्चारण सहित शिवलिङ्ग की स्थापना हो	५५
	(१२)ओङ्कार जप शङ्कर जी की प्रदक्षिणा है	५६
२२.	प्रणव के अर्थ पर विचार	५८
२३.	प्रणव का भेद तथा उपासना अधिकार	५९
२४.	प्रणव जप से प्राप्त होने वाली सिद्धियाँ	६२
२५.	प्रणव जप का स्त्रियों का अधिकार	६३
२६.	ओङ्कार जप से चारों वर्णों की उन्नति	६३
२७.	ओङ्कार जप का सबको समान अधिकार	६६
२८.	सद्गुरू की प्राप्ति दुर्लभ है	६८
२९.	शिवपुराण में ओङ्कारोपासना सम्बन्धी उपदेश का सारांश	६९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

(१) ओम् तथा शिव की एकता —

शिवो वा प्रणवो ह्येष प्रणवो वा शिवः स्मृतः ।
वाच्यवाचकयोः भेद नात्यन्तं विद्यते यतः ।।
(शिवपुराण)

अर्थात् :जो शिव सो प्रणव है, जो प्रणव सो शिव ।
नामनामी भेद नहीं, जो जाने सो शिव ।।

(२) भगवान् ओम् शिव को नमन —

नमो निष्कलरूपाय नमो निकलतेजसे ।
नमः सकलनाथाय नमस्ते सकलात्मने ।।
नमः प्रणववाच्याय नमः प्रणवलिङ्गिने ।
नमः सृष्ट्यादिकर्त्रे च नमः पञ्चमुखाय ते ।।
पञ्चब्रह्मस्वरूपाय पञ्चकृत्याय ते नमः ।
आत्मने ब्रह्मणे तुभ्यमनन्तगुणशक्तये ।।
सकलाकलरूपाय शम्भवे गुरवे नमः ।
(शि० पु० विद्य० सं० १०/२८—३०½)

(३) वेदतुल्य शिवपुराण का परिचय

शिवपुराण के विद्येश्वर संहिता के अध्याय—२ में व्यास जी के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिष्य सूत जी ने शिवपुराण के सम्बन्ध में, जो उपदेश दिया है उसका परिचय संक्षेप में कराया जा रहा है। "सबसे उत्तम जो शिवपुराण है, वह वेदान्त का सार सर्वस्व है। ......धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष — इन चारों पुरूषार्थों को देने वाला है। उस सर्वोत्तम शिवपुराण के अध्ययन मात्र से वे कलियुग के पापासक्त जीव श्रेष्ठतम गति को प्राप्त हो जायेंगे। इस पुराण को वेद के तुल्य माना गया है। इस वेदकल्प पुराण का सबसे पहले भगवान् शिव ने ही प्रणयन किया था। इसमें बारह खण्ड या संहितायें थीं और मूल शिवपुराण के श्लोकों की संख्या एक लाख थी। पूर्व काल में भगवान् शिव ने श्लोक संख्या की दृष्टि से सौ करोड़ श्लोकों का एक ही पुराणग्रन्थ ग्रथित किया था। सृष्टि के आदि में निर्मित यह पुराण—साहित्य अत्यन्त विस्तृत था। सतयुग के व्यतीत हो जाने के पश्चात् द्वापर आदि युगों में, व्यास आदि महर्षियों ने पुराणों को संक्षिप्त करना आवश्यक समझकर, पुराण को अठ्ठारह भागों में विभाजन कर दिया और सभी पुराणों की श्लोक संख्या केवल चार लाख कर दी। उस समय ऋषियों ने शिवपुराण को चौबीस हजार श्लोकों में प्रतिपादन किया। यही इसके श्लोकों की संख्या है। इस महापुराण में — विद्येश्वर, रूद्र इत्यादि सात संहितायें हैं। इन सात संहिताओं से युक्त दिव्य शिव पुराण वेद के तुल्य प्रमाणिक तथा सबसे उत्कृष्ट गति प्रदान करने वाला है। यह निर्मल शिवपुराण भगवान् शिव के द्वारा ही प्रतिपादित है। इसे शैवशिरोमणि भगवान् व्यास ने संक्षिप्त में सङ्कलित कर के, मनुष्यों का बड़ा उपकार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किया है। इसमें वेदान्त—विज्ञानमय प्रधान धर्म का प्रतिपादन किया गया है। इसको आदर से पढ़ने और सुनने से भक्त शिव का प्रिय होकर शिवलोक को ही प्राप्त करता है।"

(४) भगवान् ओङ्कारेश्वर शिव के भक्तों के लिए कुछ ज्ञातव्य बातें :—

वैसे तो शिवपुराण के प्रत्येक संहिता में, परम—शैव जनों के जानने योग्य बहुत सी बातें हैं। परन्तु इस पुराण की प्रथम संहिता, जिसका नाम विद्येश्वरसंहिता है उसमें बहुत सी उपयोगी बातें कही गई हैं। इस संहिता में मुख्य रूप से 'प्रणव' अर्थात् ओङ्कार के सम्बन्ध में, बहुत से रहस्यपूर्ण उपदेश दिये गये हैं (अध्याय १७)। इसमें प्रणव के अतिरिक्त गायत्री—मन्त्र के सम्बन्ध में भी उपदेश हैं (अध्याय १३)। शिव जी का पञ्चाक्षर मंत्र, पाँच वर्ग वाले वर्ण, गायत्री, वेद तथा मंत्र सभी की उत्पत्ति प्रणव से ही बताई गई है (अध्याय १०)। उपर्युक्त विद्येश्वर—संहिता के अध्याय—१८ में जो ज्ञातव्य बातें कही गई हैं उनका अति संक्षेप में यहाँ उल्लेख किया जा रहा है।

(क) शिवलिङ्ग के क्रम का वर्णन

सूत जी ने ऋषियों को बताया कि वह प्रणव ही समस्त अभीष्ट वस्तुओं का देने वाला प्रथम लिङ्ग (चिन्ह) है। प्रणव—लिङ्ग को प्रणव का सूक्ष्म रूप समझना चाहिए। यह सूक्ष्मलिङ्ग है। यह निष्कल = कला रहित है। शिव जी का पञ्चाक्षर मंत्र अर्थात् (नमः शिवाय) स्थूललिङ्ग है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्थूललिङ्ग सकल = कलासहित होता है। ॐ सूक्ष्मलिङ्ग और नमः शिवाय स्थूललिङ्ग, इन दोनों की पूजा करना महातप कहलाता है। वे दोनों ही लिङ्ग (चिन्ह) साधक को मोक्ष देने वाले हैं।

सूत जी ने आगे ये बात कही कि पौरूष–लिङ्ग और प्रकृति–लिङ्ग के रूप में बहुत से लिङ्ग होते हैं, जिनका पूर्ण ज्ञान भगवान् शिव को ही है। पौरूष कहते हैं अविनाशी और शक्तिशाली को तथा प्राकृत कहते हैं, नाशवान और दुर्बल को। पृथ्वी के विकार भूत जो पाँच प्रकार के लिङ्ग होते हैं, वे ये हैं :–

(१) स्वयंभू–लिङ्ग – प्रथम है। भगवान शिव वृक्षों के अङ्कुर की भाँति भूमि को भेद कर नाद–लिङ्ग के रूप में व्यक्त हो जाते हैं। वे स्वयं प्रकट होते हैं इसलिए 'स्वयंभू' कहे जाते हैं। इस लिङ्ग की पूजा उपासना से मनुष्य परम ज्ञानी हो जाता है।

(२) बिन्दु–लिङ्ग : सोने–चाँदी आदि के पत्र पर, भूमि पर अथवा वेदि पर अपने हाथ से लिखित जो शुद्ध प्रणव मन्त्ररूप लिङ्ग हैं, उसमें भगवान् शिव की प्रतिष्ठा और आवाहन करें – ऐसा बिन्दुनादमय लिङ्ग स्थावर और जङ्गम दोनों ही प्रकार का होता है। इसमें भगवान् शिव का दर्शन भावनामय ही है, जिसको जहाँ भगवान् शिव के प्रकट होने की भावना है, उसके लिए वहीं प्रकट होकर, वे अभीष्ट फल प्रदान करते हैं।

(३) प्रतिष्ठित लिङ्ग : इसके दो भेद हैं – पौरूष और प्राकृत। (१) पौरूष प्रतिष्ठित लिङ्ग – वह शिवलिङ्ग है जिसे देवताओं और ऋषियों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
ने अपने हाथ से वेदमन्त्रों के उच्चारण के द्वारा स्थापना की है। यह शक्तिशाली होने से पौरूष कहा जाता है। इसकी पूजा से ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। (२) दूसरे प्रकार का प्रतिष्ठित लिङ्ग – वह है जिसे राजा या ब्राह्मण या धनी आदमी किसी कारीगर से निर्माण करवाकर मन्त्रपूर्वक कहीं प्रतिष्ठित करते हैं। साधारण मनुष्यों के द्वारा प्रतिष्ठित होने के कारण यह 'प्राकृत' कहलाता है। यह लिङ्ग पौरूषलिङ्ग से दुर्बल माना जाता है।

(४) **चरलिङ्गलिङ्ग** : नाभि, जिह्वा, नासाग्र भाग और शिखा के क्रम से कटि, हृदय और मस्तक तीनों स्थानों में जो लिङ्ग की भावना की गई हैं, उस आध्यात्मिक लिङ्ग को चरलिङ्ग कहते हैं। यह चरलिङ्ग चार प्रकार का माना जाता है – (i) रस (ii) बाण (iii) स्वर्ण तथा (iv) सुन्दर। रसलिङ्ग ब्राह्मणों को उनकी अभीष्ठ वस्तुओं को देने वाला है। वाणलिङ्ग क्षत्रियों को विशाल राज की प्राप्ति कराता है। स्वर्णलिङ्ग वैश्यों को महाः ानवान बना देता है तथा सुन्दर लिङ्ग शूद्रों को पाप कर्म से हटाकर महाशुद्धि प्रदान करता है।

(५) **गुरू लिङ्ग** : परमशिव ही वास्तव में सब मनुष्यों के गुरू–रूप का आश्रय लेकर स्थित हैं। उन्हीं की कृपा से शिवभक्तों के अन्दर से राजस, तामस इत्यादि गुण जो मोह, माया और अज्ञान को उत्पन्न करते हैं वे सभी दूर हो जाते हैं। सच्चा गुरू वही है जो अपने शिष्यों के अन्दर से, तीन गुणों से उत्पन्न जो अज्ञान है उसे दूर कर दे और शिव के सच्चे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
स्वरूप का बोध कराये। इसी ज्ञान देने के लिए 'गुरू' नाम पड़ा। गुरू की पूजा परमात्मा शिव की ही पूजा है। गुरू के उपयोग से बचा हुआ सार पदार्थ आत्मा की शुद्धि करने वाला होता है। गुरू की आज्ञा के बिना उपयोग में लाया हुआ सब कुछ ऐसा ही है जैसे कि कोई चोर चोरी करके लाई हुई वस्तु का उपयोग करता है। अतः गुरू और शिव में अभेद भावना रखनी चाहिए क्योंकि गुरू साक्षात् शिव होकर उसे परम शिव तक पहुँचा देता है।

(ख) विभूति

सूत जी ने ऋषियों को विभूति के सम्बन्ध में इस प्रकार उपदेश दिया कि जैसे राजा अपने राज्य में सारभूत कर (Tax) को ग्रहण करता है, जैसे पेट में जठरानल नाना प्रकार के खाए हुए पदार्थों को जलाकर उससे सारवस्तु रूधिर इत्यादि को ग्रहण करके शरीर का पोषण कार्य करता है उसी प्रकार सृष्टि के रचयिता परमेश्वर शिव ने भी इस संसार प्रपंच को जलाकर भस्मरूप में सार तत्व को अपने शरीर में लगाया है। राख (भभूत) पोतने के बहाने जगत के सार को ही ग्रहण किया है जो इस प्रकार है– आकाश के सारतत्व से केश, वायु के सारतत्व से मुख, अग्नि के सारतत्व से हृदय, जल के सारतत्व से कटि भाग और पृथ्वी के सारतत्व से घुटने को धारण किया है। इसी तरह उनके सारे अंग विभिन्न वस्तुओं के साररूप हैं। महेश्वर ने अपने ललाट में जो त्रिपुण्ड धारण किया है वह ब्रह्मा, विष्णु और रूद्र का सारतत्व है। वे इन सब वस्तुओं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को जगत के अभ्युदय का हेतु मानते हैं।

तीन प्रकार की विभूतियाँ : शिवपुराण में तीन प्रकार की विभूतियाँ बतलाई गई हैं, वे हैं :–

(१) लोकाग्निजनित : इसे लौकिक भस्म भी कहते हैं। द्रव्यों की शुद्धि के लिए इसका प्रयोग होता है। मिट्टी, लकड़ी, लोहे के पात्रों की, धान्यों की, तिल आदि द्रव्यों की, वस्त्र आदि की शुद्धि इस प्रकार के भस्म से होती है। कुत्ते आदि से दूषित हुए पात्रों को भी इसी भस्म से शुद्धि होती है। वस्तु विशेष की शुद्धि के लिए यथा योग्य सजल अथवा निर्जल भस्म का उपयोग करना चाहिए।

(२) वेदाग्निजनित : भस्म वह है जो वेद मंत्र और होम कर्म से जनित हो। अग्नि में होम किया हुआ पदार्थ भस्म का रूप धारण करता है। उस भस्म को धारण करने से वह कर्म आत्मा में आरोपित हो जाता है।

(३) शिव–अग्नि जनित : भस्म वह है जो मूर्तिधारी शिव का जो – **"ॐ अघोरेभयोऽथ घोरेभयो घोरघोरतरेभ्य: सर्वेभ्य: सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रूद्ररूपेभ्य:"** मंत्र है उसे पढ़ कर बेल की लकड़ी को जलाये। उस मंत्र से अभिमंत्रित अग्नि को "शिवाग्नि" कहा जाता है। उसके द्वारा काष्ठ का जो भस्म प्राप्त होता है, वही शिव–अग्नि जनित है। कपिला गाय के गोबर अथवा गाय मात्र के गोबर को तथा शमी, पीपल, पलाश, बड़, अमलताश और वेर – इनकी लकड़ियों को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिव–अग्नि में जलाये अथवा कुश की अग्नि में, शिवमंत्र के उच्चारण पूर्वक काष्ठ को जलाये फिर उस भस्म को कपड़े से अच्छी तरह छानकर नये घड़े में भरकर रख दें। उसे समय–समय पर अपनी कान्ति की वृद्धि के लिए धारण करें। ऐसा करने वाला पुरूष सम्मान प्राप्त कर पूजित होता है।

(ग) बन्धन और मोक्ष

सूत जी ने ऋषियों से कहा कि जो जीव आठ प्रकार के बन्धनों से बंधा हुआ होता है वह 'बद्ध' कहलाता है और जो उन आठों बन्धनों से छुटा हुआ है उसे 'मुक्त' कहते हैं। प्रकृति आदि आठ तत्वों के समूह से देह की उत्पत्ति हुई है। प्रकृति, बुद्धि (महतत्व) त्रिगुणात्मक अहङ्कार और पाँच तन्मात्रायें, इन्हें प्रकृतयाद्यष्टक कहते हैं। आठ तत्वों से बने शरीर के द्वारा कर्म उत्पन्न होता है और कर्म से नूतन देह की उत्पत्ति होती है। इस प्रकार बारम्बार जन्म और कर्म होते रहते हैं। शरीर को स्थूल, सूक्ष्म और कारण के भेद से तीन प्रकार का जानना चाहिए। स्थूल शरीर जाग्रत अवस्था में व्यापार करने वाला होता है। सूक्ष्म शरीर स्वप्न अवस्था में इन्द्रिय भोग प्रदान करता है तथा कारण शरीर सुषुप्त अवस्था में आत्मानन्द की अनुभूति कराने वाला कहा गया है। जीव को उसके प्रारब्ध कर्मानुसार सुख–दुःख प्राप्त होते हैं। कर्मपाश से बँधा हुआ जीव अपने तीनों शरीरों से चक्र की भाँति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
बार–बार घुमाया जाता है। कष्ट में पड़े हुए जीव को चाहिए कि इस चक्रवत् भ्रमण की निवृत्ति के लिए चक्रकर्ता की आराधना करें। प्रकृति आदि जो आठ पाश बतलाए गये हैं उनके समुदाय को 'महाचक्र' कहा जाता है। सभी जीव इस महाचक्र के द्वारा संचालित हैं परन्तु प्रकृति से परे केवल एक ही सत्ता है जिसे 'परमात्मा शिव' करते हैं। उन्होनें सबको वश में कर लिया है इसलिए वे शिव कहे जाते हैं। भगवान् शिव के छः प्रकार के मानसिक ऐश्वर्य को इस प्रकार समझें – (१) सर्वज्ञता (२) तृप्ति (३) अनादिबोध (४) स्वतन्त्रता (५) नित्य (६) अनन्त शक्तियों से संयुक्त होना। भगवान् शिव के अनुग्रह से ही प्रकृति आदि आठों तत्व वश में हो जाते हैं। इसीलिए भगवान् शिव की उपासना करनी चाहिए। शिवलिङ्ग में, शिव की प्रतिमा में तथा शिव के भक्तजनों के, शिव की भावना करके पूजा करने से भगवान् शिव की प्रसन्नता होती है।

(घ) शिव की कृपा से नाना प्रकार की मुक्तियों की प्राप्ति

(१) **सालोक्य मुक्ति :** परमेश्वर शिव की कृपा से जब कर्मजनित शरीर अपने वश में हो जाता है तब जीव को भगवान शिव के लोक में निवास करने का सौभाग्य प्राप्त होता है उसी को सालोक्य मुक्ति कहते हैं।

(२) **सामीप्य मुक्ति :** जब शिवभक्त शरीर के अतिरिक्त तन्मात्राओं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को भी वश में कर लेता है तब उसकी आत्मा जगदम्बा सहित शिव का सामीप्य प्राप्त कर लेती है। ऐसी दशा में उसकी क्रियायें भगवान् शिव के समान ही होने लगती हैं। इसी को सामीप्य मुक्ति कहते हैं।

(३) **सार्ष्टि मुक्ति** : जब भगवान् की कृपा से भक्त के वश में उसकी बुद्धि भी हो जाती है तब जो सुख उसे प्राप्त होता है वह सार्ष्टिमुक्ति कही जाती है। बुद्धि, प्रकृति का एक कार्य है।

(४) **सायुज्य मुक्ति** : जब शिवभक्त प्रकृति को वश में कर लेता है तब उसे सायुज्य मुक्ति की प्राप्ति होती है। ऐसी अवस्था में उसे शिव जी के ऐश्वर्य प्राप्त हो जाते हैं। वह सदा तृप्त और सर्वज्ञाता हो जाता है। ये सभी प्रकार की मुक्तियाँ—शिवक्रिया, शिवतप, शिवमन्त्र, शिवजप, शिवज्ञान और शिवध्यान के अभ्यास करने से प्राप्त हो जाती है।

(ङ) शिव शब्द का अर्थ

उपर्युक्त संहिता के अध्याय १८ में ही, दो स्थानों पर शिव शब्द का अर्थ इस प्रकार लिखा हुआ है — (१) 'उन्होनें सबको अपने वश में कर लिया है इसलिए वे शिव कहे जाते हैं।' (२) 'शकार का अर्थ है, नित्य सुख और आनन्द, इकार का अर्थ है पुरूष और वकार का अर्थ है अमृतस्वरूपा—शक्ति।' इन सबका सम्मिलित रूप ही 'शिव' कहलाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(च) भिक्षा का अन्न और शिवभक्त

"शिवभक्त को भिक्षान्न प्राप्त हो तो वह शिवभक्ति को बढ़ाता है। शिवयोगी पुरूष भिक्षा अन्न को शम्भूसन्न कहते हैं।" भूतल पर कहीं भी शुद्ध अन्न का भोजन करके, मौन भाव से अपनी साधना के रहस्य को किसी पर प्रकट न करता हुआ, शिवभक्तों के सामने शिव जी की महिमा को बतलाना, शिव के निकट पहुँचा देता है।

(छ) रूद्राक्षधारण के सम्बन्ध में

शिवपुराण के विद्येश्वर संहिता के अध्याय २५, में रूद्राक्ष के सम्बन्ध में इस प्रकार का उपदेश है – "सूत जी ने ऋषियों को उपदेश दिया कि यह रूद्राक्ष अत्यन्त पवित्र वस्तु है। यह शिव जी को सबसे अधिक प्रिय है। इसके दर्शन, स्पर्श तथा जप से सम्पूर्ण पापों का नाश हो जाता है। रूद्राक्ष चार प्रकार के होते हैं – श्वेत, लाल, पीला और काला। श्वेत रूद्राक्ष ब्राह्मणों को, लाल क्षत्रियों को, पीला वैश्यों को और काला शुद्रों को धारण करना चाहिए। ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यासी सबको नियमपूर्वक रूद्राक्ष धारण करना उचित है। सभी आश्रमों, सभी वर्णों, स्त्रियों और शूद्रों को भी रूद्राक्ष धारण करने का अधिकार भगवान् शिव ने प्रदान किया है। संक्षेप में, रूद्राक्ष को भिन्न–भिन्न अङ्गों में धारण करने के लिए, शिव जी के वैदिक मंत्रों का प्रयोग लिखा हुआ है। परन्तु सरल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विधि यह है कि रूद्राक्ष धारण करते समय पाँच बार "ओम्" का जप करना चाहिये अथवा "**ॐ नमः शिवाय**" के जप करते हुए भी रूद्राक्ष धारण किया जा सकता है। रूद्राक्ष जैसे–जैसे छोटा होता जाता है वैसे ही वैसे अधिक फल देने वाला होता है। रूद्राक्ष धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि जिसे कीड़ों ने दूषित किया हो, जो टूटा–फूटा हो, जिसमें उभरे हुए दाने न हों, जो व्रणयुक्त हो तथा जो पूरा–पूरा गोल न हो, ऐसे पाँच प्रकार के दूषित रूद्राक्षों को त्याग देना चाहिए। जिस रूद्राक्ष में अपने आप ही डोरा पिरोने के योग्य छिद्र हो गया हो वही उत्तम माना गया है और जिसमें मनुष्यों ने छिद्र किया हो वह मध्यम श्रेणी का माना गया है। रूद्राक्ष अनेक प्रकार के बताये गये हैं। रूद्राक्ष एक मुख से लेकर चौदह मुख वाले तक होते हैं। इसमें एक मुख का रूद्राक्ष अत्यन्त दुर्लभ है। एक मुख तथा चौदह मुखवाला रूद्राक्ष साक्षात् शिव रूप माना गया है। शिवपुराण में, एक से चौदह मुख वाले रूद्राक्ष को धारण करने के लिए भिन्न–भिन्न चौदह तान्त्रिक मंत्र दिए हुए हैं जैसे कि–(१) ॐ ह्रीं नमः (२) ॐ नमः (३) ॐ क्लीं नमः..................इत्यादि। रूद्राक्ष धारण करने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है। रूद्राक्ष के धारण करने वालों के दर्शन मात्र से भूत–प्रेत, पिशाच, डाकिनी इत्यादि दूर भाग जाते हैं। जादू–टोना का कोई प्रभाव नहीं होता है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ज) तीन प्रकार के शिव योगी तथा जपयज्ञ का महत्व

विद्येश्वर संहिता के अध्याय १७ में तीन प्रकार के शिव योगियों के सम्बन्ध में बताया गया है। वे क्रमश:—(१) क्रियायोगी (२) तपयोगी तथा (३) जपयोगी कहलाते हैं।

(१) क्रियायोगी : वह शिवयोगी है जो अपने धन और इन्द्रियों की क्रियाओं के द्वारा श्रद्धापूर्वक शिव जी की पूजा में लगा रहता है।

(२) तपयोगी : वह शिवयोगी है जो अल्प भोजन करता है और इन्द्रियों और मन को वश में रखकर संयम का जीवन व्यतीत करता है।

(३) जपयोगी : वह शिवयोगी है जो कामदि वासनाओं से अलग होकर, शान्त चित्त से निरन्तर जप किया करता है, वह जपयोगी कहलाता है।

जपयोग, तपस्या करने वालों के लिए अत्यन्त आवश्यक है। जप करते—करते मनुष्य अपने को अत्यन्त शुद्ध कर लेता है। पञ्चतत्तवात्मक "नम: शिवाय" जिसे शिवपञ्चाक्षर मंत्र कहते हैं, उसके जप से मनुष्य सम्पूर्ण सिद्धियों को प्राप्त कर लेता है। यह ध्यान में रखने की बात है कि शिवपञ्चाक्षर मंत्र के आदि में "ओङ्कार" लगाकर ही सदा 'ॐ नम: शिवाय' मंत्र का जप करना चाहिए। गुरू से इस पवित्र शिवमंत्र को प्राप्त करके उत्तम भूमि पर आसन ग्रहण करके, महीने के शुक्लपक्ष में प्रतिपदा से आरम्भ करके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तक निरन्तर जप करता रहे। माघ औ भादों के महीने जप करने के लिए अपना विशेष महत्व रखते हैं साधक को चाहिए कि वह प्रतिदिन एक बार परिमित भोजन करे मौन रहे और इन्द्रियों को वश में रखें। इस प्रकार संयम से रहक जप करने वाला पुरूष एक सहस्र जप से ही शुद्ध हो जाता है। ज की समाप्ति के दिन कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को प्रातःकाल नित्यक करके शुद्ध हृदय से 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र का बारह हजार ज करे.....इत्यादि। इसके आगे शिवपूजन की विधि पर प्रकाश डाल गया है। इस सन्दर्भ में यह भी कहा गया है कि जप करने वाल साधक यदि अपना अनुष्ठान पूर्ण करने के पूर्व ही मृत्यु को प्राप्त ह जाए तो भी वह परलोक में कुछ समय तक उत्तम भोग भोगने पश्चात् पुनः पृथ्वी पर जन्म लेकर प्रणव पञ्चाक्षर मंत्र को जपता हुअ अपना अनुष्ठान पूरा करता है।

(झ) लोकों में शिवलोक की स्थिति

विद्येश्वर–संहिता के अध्याय १७, में लोकों का विवर दिया गया है। उसी स्थल से कुछ जानने योग्य बातें अति संक्षेप लिखी जा रही है।। सृष्टि–रचना में, पाताल से लेकर सत्यलोक त ब्रह्माजी के चौदह लोक क्रमशः निर्मित हुए हैं। सत्यलोक से ऊप क्षमा लोक तक जो चौदह भुवन हैं वे भगवान् विष्णु के लोक है क्षमा लोक से ऊपर शुचि लोक तक अठ्ठाइस भुवन हैं। शुचि लो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
में ही जो कैलाश है उसी में संहारक रूद्रदेव विराजमान है। शुचिलोक से ऊपर अहिंसा लोक तक छप्पन भुवनों की स्थिति है। अहिंसा लोक का आश्रय लेकर ज्ञान—कैलाश नामक सुन्दर स्थान है, उसमें कार्यभूत महेश्वर सबको अदृश्य करके रहते हैं। अहिंसा लोक के अन्त में "कालचक्र" की स्थिति है। यहीं तक लोकों का अन्त या लय माना गया है। जो सत्य, अहिंसा आदि धर्मों को पालन करते हुए, शिव की पूजा और भक्ति में तत्पर रहता है, वह कालचक्र को भी पार कर जाता है। उस कालचक्र से ऊपर वृषभ के आकार में धर्म की स्थिति है, वह ब्रह्मचर्य का मूर्तिमान् रूप है। उस धर्मरूप वृषभ के चार पाद ये हैं — सत्य, शौच, अहिंसा और दया। वह वृषभ शिवलोक के द्वार पर खड़ा है। क्षमा उसके सींग हैं, शम कान हैं और वेद—ध्वनि रूप शब्द को वह सुनता है। आस्तिकता उसके दो नेत्र हैं, विश्वास उसकी बुद्धि और मन है। उस क्रियारूप वृषभाकार धर्म पर कालों से परे भगवान् शिव आरूढ़ है। इस वृषभ की स्थिति के ऊपर न दिन है, न रात्रि। ब्रह्मा, विष्णु और महेश की जो अपनी—अपनी आयु है उसी को दिन कहते हैं अर्थात् इन देवों का समय काल से परे नहीं है। जहाँ धर्म की स्थिति है वहाँ जन्म—मरण आदि नहीं है। पूर्व कथित ब्रह्मचर्य लोक में, पाँच आवरणों से युक्त "ज्ञानमय—कैलाश" है। वहाँ पांच मण्डलों, पाँच ब्रह्मकलाओं और आदिशक्ति से युक्त आदिलिङ्ग प्रतिष्ठित है, उसे परमात्मा शिव का "शिवालय" कहा गया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
वहीं पराशक्ति से युक्त परमेश्वर शिव निवास करते हैं। वे सृष्टि, पालन, संहार, तिरोभाव और अनुग्रह इन पाँचों कृत्यों को करते हैं। उनके अनुग्रह से ही पशु अर्थात् जीव, पाश अर्थात् बन्धन से मुक्त होकर, शिवज्ञान की सहायता से आत्मसुख को प्राप्त करता है।

(ञ) धर्म और अधर्म से प्राप्त धन तथा दान

''धर्म से अर्थ की प्राप्ति होती है, अर्थ से भोग सुलभ होता है। फिर उस भोग से वैराग्य की सम्भावना होती है। धर्मपूर्वक अर्जित धन से जो भोग प्राप्त होता है, उससे एक दिन अवश्य वैराग्य का उदय होता है। धर्म के विपरीत अधर्म से उपार्जित हुए धन के द्वारा जो भोग प्राप्त होता है, उससे भोगों के प्रति आसक्ति उत्पन्न होती है। मनुष्य धर्म से धन पाता है तथा तपस्या से उसे दिव्य रूप की प्राप्ति होती है। कामनाओं का त्याग करने वाले पुरूष के अन्तःकरण की शुद्धि होती है। उस शुद्धि से ज्ञान का उदय होता है, इसमें संशय नहीं।'' (वि० सं० अ० १३)

''सत्ययुग आदि में तप को ही प्रशस्त कहा गया है, किन्तु कलियुग में द्रव्यसाध्य धर्म (दान आदि) अच्छा माना गया है। ....अपने धन के तीन भाग करें–एक भाग धर्म के लिए, दूसरा भाग वृद्धि के लिए तथा तीसरा भाग उपभोग के लिए।.........खेती से पैदा किए हुए धन का दसवाँ अंश दान कर दें।.......वृद्धि के लिए किये गये व्यापार में प्राप्त हुए धन का छठा भाग दान कर देने योग्य है। ....(वि० सं० अ० १३)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ट) शिवलिङ्ग का सच्चा स्वरूप

शिवपुराण के विद्येश्वर—सहिंता के अध्याय—११, में चराचर जीवों को ही भगवान् शिव का प्रतीक अथवा लिङ्ग अथवा चिन्ह होना कहा गया है। इस सम्बन्ध में यह उपदेश है – "स्थावर और जङ्गम के भेद से लिङ्ग भी दो प्रकार का कहा गया है। वृक्ष, लता आदि को स्थावर लिङ्ग कहते हैं और कृमि—कीट आदि को जङ्गम लिङ्ग। स्थावर लिङ्ग को सीचनें आदि के द्वारा सेवा करनी चाहिये और जङ्गम लिङ्ग को आहार एवं जल आदि देकर तृप्त करना उचित है। उन स्थावर—जङ्गम जीवों को सुख पहुँचाने में, अनुरक्त होना भगवान् शिव का पूजन है, ऐसा विद्वान पुरूष मानते हैं। यों चराचर जीवों को ही भगवान् शङ्कर के प्रतीक मानकर, उनका पूजन करना चाहिए।" सारांश यह है कि शिव की सच्ची उपासना यह है कि स्थावर और जङ्गम इन दोनों प्रकार की उनकी रचनाओं में, उनका ही दर्शन करना चाहिए। संक्षेप में सम्पूर्ण संसार को वेदान्त की दृष्टि से केवल एक शिवतत्व के द्वारा ही व्याप्त समझना चाहिए। ऐसी भावना रखने वाले शिवभक्त में किसी के प्रति ईर्ष्या—द्वेष, मोह—शोक इत्यादि नहीं हो सकता।

(ठ) भगवान् शिव की पूजा के लिए पाँच वैदिक मंत्र

शिवपुराण के विद्येश्वर—सहिंता के अध्याय—११ में शिवलिङ्ग तथा शिव जी की पूजा जिन पाँच मत्रों द्वारा करने का आदेश है वे मन्त्र ये हैं –

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।
भवे भवेनातिभवे भवस्य मां भवोद्भवाय नमः।।१।।
ॐ वामदेवाय नमो जेष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रूद्राय नमः।।
कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो
बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मथाय नमः ।।२।।
ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रूद्ररूपेभ्यः।।३।।
ॐ तत्पुरूषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रूद्रः प्रचोदयात् ।।४।।
ॐ ईशानः सर्वविद्यानां ईश्वरः सर्वभूतानां
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मेऽस्तु सदाशिवोम् ।।५।।

(५) शिव कथित उनके दो स्वरूप

शिवपुराण के विद्येश्वर–सहिंता के अध्याय–९ में भगवान् शिव ने अपने शिष्य ब्रह्मा और केशव को अपने दो स्वरूपों के सम्बन्ध में इस प्रकार परिचय कराया – 'मेरे दो रूप हैं : (१) सकल और (२) निष्कल। दूसरे किसी के ऐसे रूप नहीं हैं। पहले मैं स्तम्भ रूप से प्रकट हुआ फिर अपने साक्षात् रूप से। 'ब्रह्मभाव' मेरा निष्कल रूप है और महेश्वर भाव सकल रूप है। ये दोनों ही मेरे सिद्ध रूप हैं। मैं ही परब्रह्म परमात्मा हूँ। कलायुक्त और कलारहित मेरे ही स्वरूप हैं। मैं सबसे बृहत्, जगत् की वृद्धि करने वाला होने के कारण 'ब्रह्म' कहलाता हूँ। पहले मेरी ब्रह्मरूपता का बोध कराने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के लिये निष्कल अर्थात् कलारहित लिङ्ग प्रकट हुआ फिर तत्काल ही ईश्वरत्व को बतलाने वाला मेरा कला सहित = 'सकल' रूप प्रकट हो गया। अत: कला सहित मैं जगदीश्वर हूँ और कला रहित मैं परब्रह्म परमात्मा हूँ। हे ब्रह्मा ! हे केशव! तुम दोनों यहाँ रहकर मेरे लिङ्ग (चिन्ह) की उपासना प्रतिदिन किया करो। शिवलिङ्ग की उपासना और स्थापना बड़ा ही पवित्र और प्रधान कार्य है। इस जगत में, जो पाँच कृत्य जाने जाते हैं वे मेरे ही हैं क्योंकि मैं ही देव और मानव सबका ईश्वर अथवा शासक हूँ।''

(६) शिवजी के पाँच कृत्य तथा ओम् और पञ्चाक्षर मंत्र की महिमा

विद्येश्वर–सहिंता के अध्याय–१० में ब्रह्मा तथा विष्णु के नम्रतापूर्वक प्रश्न करने पर भगवान् शिव ने अपने पाँच कृत्यों के सम्बन्ध में इस प्रकार उपदेश दिया – ''हे ब्रह्मा ! हे अच्युत ! – (१) सृष्टि (२) पालन या स्थिति (३) संहार (४) तिरोभाव तथा (५) अनुग्रह – ये पाँच ही मेरे जगत सम्बन्धी कार्य हैं जो नित्य सिद्ध है–

(१) **सृष्टि** : संसार की रचना का जो आरम्भ है उसी को सर्ग अथवा 'सृष्टि' कहते हैं।

(२) **स्थिति** : मुझसे पालित होकर सृष्टि का स्थिर रूप से रहना ही इसकी 'स्थिति' है।

(३) **संहार** : रचित और पालित सृष्टि का विनाश ही 'सहांर' है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(४) तिरोभाव : प्राणों के उत्क्रमण को 'तिरोभाव' कहते हैं।

(५) अनुग्रह : सबसे छुटकारा मिल जाना ही मेरा 'अनुग्रह' है।

सृष्टि आदि जो चार कृत्य हैं वे संसार को विस्तार करने वाले हैं, परन्तु पाँचवाँ कृत्य जो 'अनुग्रह' है वही मोक्ष का हेतु है। यह अनुग्रहकृत्य सदा मुझमें ही रहता है। मेरे पाँचों कृत्यों को भक्तजन पाँचों भूतों में अनुभव करते हैं, जैसे कि—(१) पृथ्वी में सृष्टि (२) जल में स्थिति (३) अग्नि में संहार (४) वायु में तिरोभाव और (५) आकाश में अनुग्रह। इन पाँच कृत्यों का भार वहन करने के लिए ही मेरे पाँच मुख हैं। चारों दिशाओं में मेरे चार मुख हैं और इनके बीच में, मेरा पाँचवाँ मुख हैं। ब्रह्मा और विष्णु ! तुम दोनों की तपस्या से प्रसन्न होकर मैनें तुम्हें 'सृष्टि' और 'स्थिति' नामक दो कृत्य प्रदान किया है। मैंने ही अपनी दो विभूति स्वरूप देव—रूद्र और महेश्वर को अन्य दो कृत्य 'सहांर' और 'तिरोभाव' प्रदान किया है। परन्तु 'अनुग्रह' नामक कृत्य तुम सभी देवों में से किसी ने भी प्राप्त नहीं किया। अत: वह मेरे पास ही सदा रहता है।''

(७) ओम् ही सबका मूल कारण है

भगवान् शिव ने अपने कृत्यों के सम्बन्ध में उपदेश देने के पश्चात् अपने मुख से ही 'ओम्' के सम्बन्ध में, ब्रह्मा और विष्णु को इस प्रकार जानकारी कराई – ''मैनें पूर्वकाल में अपने स्वरूपभूत मन्त्र का उपदेश किया है जो ओङ्कार के रूप में प्रसिद्ध है। यही मन्त्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिव उच्चारित ॐ से वर्ण गायत्री तथा वेदों की उत्पत्ति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महामङ्गलकारी है। सबसे पहले मेरे मुख से ओङ्कार (ॐ) प्रकट हुआ। यही मेरे स्वरूप का बोध कराने वाला है। 'ओङ्कार' वाचक है और मैं वाच्य हूँ। यह मन्त्र मेरा स्वरूप ही है। प्रतिदिन ओङ्कार का निरन्तर स्मरण करने से सदा मेरा ही स्मरण होता है।''

भगवान् शिव ने अपने पाँचों मुखों से, ओङ्कार के पाँचों अवयवों के सम्बन्ध में, ब्रह्मा और विष्णु को इस प्रकार उपदेश दिया — ''मेरे उत्तरवर्त्ती मुख से 'अ' कार, पश्चिम मुख से 'उ' कार, दक्षिण मुख से 'म' कार, पूर्ववर्त्ती मुख से बिन्दु तथा मध्यवर्त्ती मुख से नाद प्रकट हुआ। इस प्रकार — अ+उ+म्+०+॒ — इन पाँच अवयवों से ओङ्कार का विस्तार हुआ। इन सभी अवयवों से एकी भूत होकर वह प्रणव ''ॐ'' नामक एकाक्षर हो गया। यह नाम—रूप आत्मक सारा जगत् तथा वेद और उत्पन्न स्त्री—पुरूष वर्ग रूप दोनों कुल, इस प्रणव मंत्र से व्याप्त है। यह मंत्र ''शिव'' और ''शक्ति'' दोनों का बोधक है। इसी से पञ्चाक्षर मंत्र (नमः शिवाय) की उत्पत्ति हुई है। वह अकार आदि क्रम से और नकार आदि क्रम से क्रमशः प्रकाश में आया है (ज्ञातव्य—भाव यह है कि ओम् के अवयव—अ से न, उ से म, म् से श, बिन्दु से व और नाद से य—इस क्रम से नमः शिवाय बना) इस पञ्चाक्षर मन्त्र नमः शिवाय से मातृका वर्ण प्रकट हुए हैं जो पाँच भेद वाले हैं। (ज्ञातव्य — भाव यह है कि पञ्चाक्षर मन्त्र—नमः शिवाय से—अ इ उ ऋ लृ—ये पाँच मूलभूत स्वर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तथा व्यजंन भी पाँच—पाँच वर्णों से युक्त पाँच वर्ग वाले अर्थात् 'क' वर्ग के पाँचों अक्षर तथा 'च' वर्ग के पाँचों अक्षर, 'ट' वर्ग के पाँचों अक्षर, 'त' वर्ग के पाँचों अक्षर तथा 'प' वर्ग के पाँचों अक्षर अर्थात् २५ व्यंजन ये सभी उत्पन्न हुए) उसी से मुख्य मंत्र (ॐ) सहित त्रिपदा गायत्री प्रकट हुई। उसी गायत्री से सम्पूर्ण वेद प्रकट हुए और उन वेदों से करोड़ो मंत्र निकले। उन वेद मंत्रों से मनुष्यों के भिन्न—भिन्न कार्यों की सिद्धि होती है। परन्तु इस प्रणव और पञ्चाक्षर मंत्र से सभी मनोरथों की सिद्धि हो जाती है। इससे भोग और मोक्ष दोनों की प्राप्ति हो जाती है।'' इन उपदेशों को सुनकर ब्रह्मा और विष्णु ने जिन शब्दों में नाना प्रकार से अपने गुरूदेव शिवजी की स्तुति की उसका संक्षेप में, मूल श्लोक प्रस्तुत किया जा रहा है –

नमः प्रणववाच्याय नमः प्रणवलिङ्गिने।

नमः सृष्टयादि कर्त्रे च नमः पञ्चमुखायते।। इत्यादि।

भाव यह है कि हे प्रणव नाम वाले भगवान् शिव ! आपको नमस्कार है। हे प्रणव लिङ्ग अर्थात् चिन्ह वाले भगवान् शिव ! आपको नमस्कार है। हे सृष्टि की रचना, पालन और संहार करने वाले भगवान् शिव! आपको नमस्कार है। हे पाँच मुखों वाले भगवान् शिव आपको बार—बार नमस्कार है। इत्यादि।

इस प्रकार ओम् से सबकी उत्पत्ति बतलाकर ब्रह्मा और विष्णु को ओम् मंत्र का तीन बार उच्चारण करके, उन्हें मंत्र की दीक्षा दी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
इन शिष्यों ने गुरू दक्षिणा के रूप में, अपने आपको ही समर्पित कर दिया। भगवान् महेश्वर ने यह भी बतलाया कि 'आर्द्रा' नक्षत्र से युक्त चतुर्दशी को यदि प्रणव का जप किया जाए तो वह अक्षय फल देने वाला होता है। सूर्य की कान्ति से युक्त 'महाआर्द्रा' नक्षत्र में एक बार किया हुआ प्रणव–जप कोटि गुना जप का फल देता है। यह भी जानना चाहिए कि मेरे लिङ्ग अथवा मूर्ति का दर्शन प्रातः काल अर्थात् दोपहर के पहले करना चाहिए। लिङ्ग का ओंङ्कार मंत्र (ॐ) से और मूर्ति का पञ्चाक्षर मंत्र **(नमः शिवाय)** से पूजन करना चाहिए। इस प्रकार उन दोनों देवताओं को उपदेश देकर भगवान् शिव वहीं अन्तर्धान हो गये।

(८) ऋषियों द्वारा ओंकार–सम्बन्धी जिज्ञासा तथा व्यासदेव का उत्तर–

शिवपुराण के कैलास–संहिता में एक कथा आई है, उसका सारांश इस प्रकार है–एक बार ऋषियों ने ओङ्कार को तत्व से जानने की जिज्ञासा को लेकर, नैमिषारण्य में एक दीर्घ यज्ञ का अनुष्ठान किया। उस अवसर पर महर्षि व्यास भी वहाँ पधारे।

महर्षि व्यास को यज्ञ में विराजमान देखकर सभी ऋषियों ने महर्षि के पास जाकर इस प्रकार प्रार्थना की,–

'हे प्रभो ! हम सब परमेश्वर के स्वरूप तथा नाम को भलीभाँति नहीं जानते। इस त्रिभुवन में आपके अतिरिक्त इस रहस्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
को बतलाने वाला दूसरा कोई नहीं है। कृपा कर हमें बतलाइये''।

व्यासदेव का उत्तर–

ऋषियों की प्रबल श्रद्धा और जिज्ञासा को देखते हुए श्री शुकदेव जी के पिता महामुनि व्यास ने – ''वेदान्त सारसर्वस्वम् प्रणवं परमेश्वरम्'' का ध्यान करके इस प्रकार उपदेश देना आरम्भ किया–हे विप्रो !

दुर्लभं हि शिव ज्ञानं प्रणवार्थ प्रकाशकम्।
येषां प्रसन्ना भगवान् साक्षात् शूलवरायुधः।।
तेषामेव शिवज्ञानं प्रणवार्थ प्रकाशकम्।

(कै०सं० शिवपुराण)

हे भाग्यशाली विप्रगण! आपका प्रश्न बड़ा ही सुन्दर है। सुनिए–

'प्रणव के अर्थ का प्रकाशक शिव का ज्ञान संसार में अत्यन्त दुर्लभ है। जिन भक्तों के ऊपर त्रिशूल धारण करने वाले भगवान् शंकर की कृपा होती है उन्हीं को प्रणव के अर्थ का प्रकाश करने वाला शिव–ज्ञान प्राप्त होता है''।

महर्षि व्यास जी के इन शब्दों पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है–'प्रणव के अर्थ का प्रकाशक शिव–ज्ञान अति दुर्लभ है''–इसका भाव यह है कि शिव के स्वरूप का ज्ञान कई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
प्रकार से होता है। भक्त जन शंकर को कैलास के हिम–शिखर पर, गरल पान करते हुए, गंगावतरण होते हुए, विश्व–संहारक तथा अन्य नाना प्रकार की अपनी भावनाओं के अनुसार, ज्ञान प्राप्त करते हैं परन्तु व्यास देव का संकेत इस बात की ओर है कि शिव के ओङ्कार नाम तथा स्वरूप को तत्व से जानने वाला भक्त अत्यन्त दुर्लभ है। शंकर के अनन्त गुणों के आधार पर अनन्त नाम भी हो सकते हैं। शिव–पुराण के अन्तर्गत कोटि रूद्र–संहिता के अन्दर भगवान् विष्णु के द्वारा "शिव सहस्त्र नाम" का कीर्तन किया गया है। इस प्रकरण के देखने से, कम से कम शंकर जी के एक हजार नाम तो शिवपुराण में ही मिल जाते हैं। उन सभी नामों के द्वारा शिव का ही बोध कराया गया है। परन्तु ओङ्कार ही भगवान् का मुख्य नाम है इसलिए उपर्युक्त श्लोकों में यह स्पष्ट कहा गया है कि – "वाच्य और वाचक इन दोनों में भेद नहीं होता"–इसी प्रणव रूप में शिव का सच्चा ज्ञान हो जाना अति दुर्लभ कहा गया है। क्यों दुर्लभ है ? इस कारण से दुर्लभ है कि "ओम्" भगवान् का वेदोक्त नाम है। वेद के ज्ञाताओं को इस वैदिक नाम के महत्व का ज्ञान विशेष रूप से होना सम्भव है। इस एक ही नाम में परमात्मा के सभी गुण आ जाते हैं। अलग–अलग गुणों को लेकर, अलग–अलग नाम रखने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। इसलिए मङ्गलकारी ओङ्कार रूप शिव को इन वैदिक शब्दों में बार–बार नमस्कार किया गया है–

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च – इस मंत्र में शिव रूप में विश्वात्मा परमात्मा को अत्यन्त मङ्गलस्वरूप वाला कहा गया है क्योंकि वही अपने भक्तों को मोक्ष—सुख तथा शिवधाम का देने वाला है, इसीलिए बार—बार नमस्कार किया गया है। यही कारण है कि व्यास देव ने भी स्पष्ट कहा है कि जिन पर भगवान् की कृपा होगी वे ही इस प्रणव के विषय में जान सकेंगे—सभी उपासक नहीं जान पायेगें।

ऋषियों को उत्तर देते हुए महर्षि व्यास ने, एक परम प्राचीन इतिहास को इस सम्बन्ध में सुनाया कि उमा देवी, किस प्रकार भगवान् शङ्कर को वर रूप में ग्रहण कर सकीं। उन्होने उस कहानी को सुनाई जिसमें स्वयं पार्वती ने भगवान् शङ्कर से प्रणव के सम्बन्ध में प्रश्न करके ज्ञान प्राप्त किया था। वह कथा संक्षेप रूप से इस प्रकार है कि शङ्कर—पार्वती के विवाह के पश्चात् शिव जी ने पार्वती जी को ओङ्कारयुक्त मन्त्र का उपदेश दिया परन्तु वह उस मन्त्र को पूर्ण रूप से नहीं जानने के कारण इस प्रकार पूछने लगीं –

(९) ओङ्कार के सम्बन्ध में पार्वती जी का प्रश्न :—

उपदिष्टस्त्वयादेव मन्त्राः सप्रणवा मताः।
तत्रादौ श्रोतुमिच्छामि, प्रणवार्थ विनिश्चितम्।।
मात्राः कति समाख्याताः कथं वेदादिरूच्यते।। इत्यादि।

(शिवपुराण)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पार्वती जी ने कहा – हे देव! आपने ओङ्कार के सहित मंत्रों का उपदेश किया है। इस कारण सर्वप्रथम मैं प्रणव के अर्थ का ज्ञान प्राप्त करना चाहती हूँ। प्रणव की उत्पत्ति किस प्रकार हुई ? वह प्रणव कहा क्यों जाता है ? प्रणव में कितनी मात्राएं होती हैं ? वह किस कारण से वेद के आदि में कहा जाता है ? प्रणव के कितने देवता होते हैं ? इत्यादि अन्य कई विषयों को भी पूछा।

(१०) ओङ्कार के सम्बन्ध में शंकर जी का उत्तर :—

पार्वती के प्रश्नों का उत्तर शंकर जी ने इस प्रकार देना आरम्भ कर दिया :—

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि.......................................।
प्रणवार्थपरिज्ञानमेव ज्ञानं मदात्मकम्।
बीजं तत्सर्व विद्यानां मन्त्रं प्रणव नामकम्।।
देवो गुणत्रयातीतः सर्वज्ञः सर्वकृत्प्रभुः।
ओमित्येकाक्षरे मन्त्रे स्थितोऽहम् सर्वगः शिवः।।
सर्वार्थ साधकं तस्मादेकं ब्रह्मैतदक्षरम्।
तेनोमिति जगत्कृत्स्नं कुरूते प्रथमं शिवः।।
शिवो वा प्रणवो ह्येष प्रणवो वा शिवः स्मृतः।
वाच्य वाचकयोर्भेदो नात्यन्तम् विद्यते यतः।।
तस्मादेकाक्षरं देवं मां च ब्रह्मर्षयो विदुः।
वाच्य वाचकयोरैक्यं मन्यमाना विपश्चितः।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अतस्तदेव जानीयात्प्रणवं सर्वकारणम्।
निर्विकारी मुमुक्षुर्मा निर्गुणं परमेश्वरम्।।
एनमेव हि देवेशि सर्वमन्त्र शिरोमणिम्।
काश्यामहं प्रदास्यामि जीवानां मुक्ति हेतवे।।
ब्रह्मादि स्थावरान्तानां सर्वेषां प्राणिनां खलु।
प्राणः प्रणव एवायं तस्मात्प्रणव ईरितः।।
आद्यम् वर्णम् अकारं च उकारम् उत्तरे ततः।
मकारं मध्यतः चैव नादान्तं तस्य चोमिति।। इत्यादि।।
(कै० सं० शि० पु०)

हे देवि! सुनो! तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर दे रहा हूँ – प्रणव का अर्थ जान लेना ही मेरा ज्ञान प्राप्त कर लेना है। प्रणव ही वह मन्त्र है जो सभी विद्याओं का बीज है। वही प्रणवदेव ही तीनों गुणों से परे सर्वज्ञ और सबका सृजन करने वाला है। ॐ इस एक अक्षर वाले मन्त्र में सर्वगत स्वयं मैं शिव ही विद्यमान रहता हूँ। इसीलिए सभी अर्थों का साधक एक ही ब्रह्मरूप ॐ अक्षर है। इसी ॐ से सर्वप्रथम शंकर सम्पूर्ण जगत् की रचना करते हैं। भगवान् शिव ही प्रणव हैं और प्रणव ही शिव है। वाच्य और वाचक में कुछ भी भेद नहीं होता है।

इसलिए एक अक्षर (ॐ) मुझ देव को ब्रह्मऋषि लोग जानते हैं। वाच्य–वाचक की एकता को ज्ञानी जन जानते और मानते हैं। इसलिए प्रणव को ही सबका आदि कारण समझना चाहिए। मुमुक्षु

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गण मुझ निर्विकारी, निर्गुण परमेश्वर को प्रणवरूप में जानते हैं। हे देवि! यही प्रणव सभी मंत्रों का शिरोमणि है। मैं काशी में प्राण—त्यागने वालों की मुक्ति के लिए भी इसी मंत्र का उपदेश करता हूँ। ब्रह्मा से लेकर स्थावर—पर्यन्त यह प्रणव ही सबका प्राण है। इसी हेतु इसे प्रणव कहते हैं। आदि में अकार, उसके बाद उकार तब मकार अन्त में नाद बिन्दु होता है। तब ओम् अक्षर सिद्ध होता है।

यह इतना तो मूल—शिवपुराण का संस्कृत भाग जो ऊपर दिया गया है उसका शब्दार्थ हुआ। परन्तु शिव जी ने इसके आगे बहुत कुछ महत्वपूर्ण बातों को प्रणव के विषय में बतलाया है उसका सारांश केवल हिन्दी में ही नीचे दिया जा रहा है, पाठक संस्कृत भाग को शिवपुराण में ही देख सकते हैं।

शिव जी ने कहा—'हे पार्वती! यह आधी मात्रा ही नादबिन्दु स्वरूप मानी गई है...........वेद के आदि में ओङ्कारात्मक भी मैं ही विद्यमान रहा करता हूँ। ओङ्कार मेरा वाचक होने से वेद के आदि में कहा जाता है। इस ॐ का 'अ' महान् बीज है इसी के रजोगुण से ब्रह्मा हुआ करते हैं! 'उ' इसकी प्रकृति योनि है। सत्व गुण के द्वारा पालन करने वाले "हरि" विष्णु होते हैं। "म" यह बीज है। इसके तमोगुण से युक्त सृष्टि के संहारक शिव जी हैं। विन्दु स्वरूप साक्षात् महेश्वर देव हैं। उससे तिरोभाव होता है। नाद के स्वरूप में शिव ही हैं, जो सब पर कृपा करते हैं। इस मङ्गलस्वरूप प्रणव का ध्यान करना चाहिए।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(११) ओंङ्कार का कलाओं के साथ सम्बन्ध :—

आगे पार्वती जी को शंकर भगवान् ने कहा कि "ब्रह्मा के स्वरूप वाले, बामदेव, अघोर, ईशान इत्यादि सब मेरे ही स्वरूप हैं तथा अब कला की दृष्टि से ॐ के स्वरूप को तुम्हें बतलाता हूँ सावधानी से सुनो :—

(१) 'अकार' के स्वरूप में = शिव = आठ कलाओं वाले हैं।

(२) 'उकार' = वामदेव रूप में = तेरह कलाएँ उपस्थित है।

(३) 'मकार' = अघोर रूप में = चार कलाएँ उपस्थित हैं।

(४) विन्दु = पुरूष रूप में = चार कलाएँ उपस्थित हैं।

(५) नाद = ईशान स्वरूप में = पाँच कलाएँ उपस्थित हैं।

(१२) पार्वती जी के कुछ शेष प्रश्नों का उत्तर :—

इतनी बातें ओंङ्कार के सम्बन्ध में बतलाने के पश्चात् शिव जी ने पार्वती जी के प्रश्नों में जो शेष बातें रह गई थीं उनका भी उत्तर देना आरम्भ कर दिया। उन्होंने पूजा—स्थान में मण्डल—रचना की विधि को सविस्तार बतलाया है। जिन प्रेमी पाठकों को कर्मकाण्ड से विशेष प्रेम हो वे उस प्रकरण को पढ़कर अच्छी तरह समझकर लाभ उठा सकते हैं। यह कर्म—काण्ड बहुत सरल प्रतीत नहीं होता। वह इस पुस्तिका का विषय भी नहीं है इस हेतु उसका पूर्ण विवरण न देकर संक्षेप में जो कुछ ओम् से सम्बन्धित बातें हैं उनका ही अति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
सूक्ष्म भाव यहाँ दिया जाता है :– "चारों बीजों को क्रम से चौकोन के प्रमाण से लिखना चाहिए। पूर्व की ओर तो शुभ्र बिन्दु तथा दक्षिण में कृष्ण वर्ण का लिखें। उत्तर की ओर लाल वर्ण उकार, मकार पश्चिम की ओर लिखें। अकार को पीले रङ्ग का बनावें। इस प्रकार चारों वर्णों में लिखना चाहिए। हे सुन्दरी! नीचे की पंक्ति से आरम्भ करके ऊपर वाली चारों पक्तियों, पीत, सफेद, लाल और काला रङ्ग का बनावें" इत्यादि। इसके आगे अन्य बहुत प्रकार के कर्मकाण्ड बतलाये गये हैं।

मण्डल बना लेने के बाद उस पर बाघाम्बर बिछाकर किस प्रकार मंत्रों का जप किया जाए ? किस प्रकार ओङ्कार की पूजा की जाए ? कैसे प्रणायाम् किया जाए ? ये सभी बातें विस्तार से बतलाई गई हैं, जो इस पुस्तिका के विषय नहीं होने से उनको छोड़कर केवल जो ओङ्कार से सम्बन्ध रखने वाली बातें हैं वे संक्षेप में इस प्रकार हैं :–

प्रणवस्य ऋषिः ब्रह्मा देवि गायत्रीमीरितम्।
छन्दोऽव देवताहम् वै परमात्मा सदाशिवः।।
अकारो वीजम् आख्यातम्, उकारः शक्तिः उच्यते।
मकारः कीलकम् प्रोक्तं मोक्षार्थे विनियुज्यते।।
अकारमपि उकारं च मकारं विन्दु संयुतम्।
नमोऽन्तं प्रोच्य सर्वत्र हृदयादौ न्यसेदथ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अकारं पूर्व उद्‌धृत्य ब्रह्मात्मानम् अथाचरेत्।
डेंतं नमोऽन्तं हृदये विनियुज्यात् तथा पुनः।।
उकारं विष्णु सहितं शिरोदेशे प्रविन्यसेत्।
मकारं रूद्र सहितं शिखायां तु प्रविन्यसेत्।। इत्यादि।

ऊपर कह आये हैं कि पार्वती जी ने शंकर भगवान् से प्रणव के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिए जिन प्रश्नों को किया था उनमें से प्रणव के ऋषि देवता इत्यादि के विषय में भी प्रश्न थे। उन्हीं प्रश्नों का उत्तर जो शिव जी ने दिया था वह ऊपर संस्कृत में शिवपुराण से उद्‌धृत किया गया है। अब उसी संस्कृत अंश का संक्षेप में हिन्दी भाषा में भावार्थ दिया जा रहा है :— शिव जी बोले — ''हे देवि! प्रणव का ऋषि ब्रह्मा है। देवी गायत्री छन्द तथा सदाशिव परमात्मा देवता हैं। अकार बीज है। उकार शक्ति है। मकार कीलक है और मोक्ष के लिए इसका प्रयोग होता है। अकार, उकार और विन्दु के सहित मकार तथा सबके अन्त में नमो जोड़कर (ओम् नमः) इस प्रकार कहकर हृदय में न्यास करना चाहिए। सर्वप्रथम अकार का उद्‌गार कर ब्रह्मात्मा उच्चारण करे जैसे अं ब्रह्मात्मने नमः। इस विधि से हृदय में न्यास करे अर्थात् स्पर्श करें। उकार का विष्णु के सहित ध्यान करे। शिरोदेश में विनियोग करे और रूद्र के सहित मकार को शिखा के स्थान में विनियोग करे......इत्यादि।'' इस प्रकार कीलक, न्यास, इत्यादि को प्रणव के सम्बन्ध से बतलाकर, अन्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
प्रकार के न्यास करने की बातें भी कहकर अन्त में शिव जी ने यह कहा— "बुद्धिमान् पुरूष को पहले प्रणवन्यास करना चाहिए तब 'हंस न्यास' इत्यादि करे।"

इस उपदेश के बाद, शिव जी का ध्यान, आवाहन, अर्घ्य तथा विधान पूर्वक पूजन की बातें कही गई हैं। जिज्ञासु पाठक वह पूरा प्रकरण शिव–पुराण में ही देख सकते हैं। संक्षेप में इस प्रकार समझें : 'हे पार्वती! अपने बायीं तरफ चौकोन मण्डल की रचना करें और ॐ का इस प्रकार समर्चन करके शंख अस्त्र से शुद्ध करें..... .प्रणव के द्वारा सात बार गन्धाक्षत पुष्प इत्यादि से पूजन करना चाहिए.........इत्यादि।"

(१३) प्रणव से भवताप का नाश — व्यास जी के उपदेश की समाप्ति—

इस प्रकार जो कथा व्यास जी ने नैमिषारण्य के यज्ञकर्ता ब्राह्मणों को उनके ओङ्कार सम्बन्धी यज्ञ करने के समय सुनाई थी जिसमें ओङ्कार के विषय में, शिव और शिवा का परस्पर प्रश्नोत्तर चल रहा था, उस कथा को महामुनि व्यास ने इन शब्दों के साथ समाप्त कर दिया :—

"अति गुह्यम् इदम् विप्राः प्रणवार्थ प्रकाशकम्।
शिवज्ञान परं ह्येतद् भवतापार्ति नाशनम्।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्थात् हे ब्राह्मणो! ओङ्कार के अर्थ का प्रकाश करने वाला यह परम–गुप्त–रहस्य है। इस प्रणवविद्या के द्वारा प्राप्त हुआ शिवज्ञान सभी लौकिकदुखों का विनाश करने वाला है।

(१४) शिव जी के अन्य मुख्य आठ नामों का अर्थ सहित परिचय–

यद्यपि इस पुस्तिका का प्रतिपाद्य विषय ओङ्कारोपासना ही है तो भी संक्षेप से धर्मात्मा पाठकों के लिए शिव जी के आठ नामों को बतलाया जायेगा। उन नामों पर गम्भीरता से विचार करने से पता चलेगा कि एक अनादि निराकार परमात्मा को नाना रूपों में वर्णित किया गया है। परमात्मतत्व अर्थात् ओङ्कार तो एक ही है, भेद है केवल नाम और रूपों का। शिव जी ने कहा :– "मुझ शिव के प्रतिपादक ये आठ नाम हैं, सुनो! (१) शिव (२) महेश्वर (३) रूद्र (४) विष्णु (५) पितामह (६) संसारवैद्य (७) सर्वत्र (८) परमात्मा। इनमें प्रथम से लेकर पाँचवे तक तो नाम उपाधि के कारण रखे गये हैं। उपाधि के निवृत्त होने पर यह संज्ञा भी निवृत्त हो जाती है। शेष तीन नाम इस जगत् के उपादान, कारणस्वरूप प्रकृति के योग से है।" इस प्रकार की बात कहने के पश्चात् उन नामों का वर्णन इस प्रकार किया गया है :–

(१) शिव = सभी कल्याणकारी गुणों के एक ही आधार होने के कारण उस ईश्वर को महात्मा जन शिव कहकर पुकारते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(२) महेश्वर = तेइस तत्वों से पृथक चौबीसवीं मूल–प्रकृति है। उससे भी परे पचीसवां पुरूष है। उस पुरूष से भी जो परे हैं वही परमेश्वर है। माया को प्रकृति और मायी को महेश्वर कहते हैं। जो ओङ्कार रूप, वेद के द्वारा जानने योग्य है वही महेश्वर है।

(३) रूद्र = दुख को अथवा दुखों के कारण को जो दूर करे वही रूद्र है।

(४) विष्णु = शिव ही जब सभी तत्वों में व्याप्त हो जाता है तो विष्णु स्वरूप होता है।

(५) पितामह = इस सब जगत् के पितृ स्वरूप होने से ब्रह्मा या पितामह भी वही है।

(६) संसार वैद्य = वैद्य के समान रोगों के निवारण करने में समर्थ होने तथा प्राणियों को भोगों से बचाकर मोक्ष का दाता होने से शिव ही संसार – वैद्य कहे जाते हैं।

(७) सर्वत्र = सर्व व्यापक होने से यह नाम है।

(८) परमात्मा = सर्वज्ञ तथा सभी में विराजमान विश्वात्मा होने से तथा सबसे परम होने से परमात्मा भी शिव ही है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(१५) भगवान् शिव को सभी नामों में ओम् नाम की श्रेष्ठता –

शिवपुराण के कोटिरूद्रसंहिता में भगवान् विष्णु ने, सभी देवों के देव भगवान् शिव की स्तुति, उनके सहस्त्र नामों के द्वारा की है। इस प्रकार भगवान् सदाशिव के अनन्त गुणों के आधार पर अनन्त नाम हो सकते हैं। पूर्व पंक्तियों में, भगवान् शिव के मुख्य आठ नामों को उनके अर्थ सहित संक्षेप में बताया गया है। यह सब कुछ होते हुये भी शिवपुराण के 'वायवीय–संहिता उत्तर खण्ड' के अध्याय–६ में यह स्पष्ट आदेश है कि शिव जी की उपासना 'ओम् नाम' से ही करनी चाहिये। आदेश का हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है–"प्रणव ॐ उन परमात्मा शिव का वाचक है। शिव, रूद्र आदि नामों में, प्रणव ही सबसे उत्कृष्ट माना गया है। प्रणववाच्य शम्भु के चिन्तन और जप से जो सिद्धि प्राप्त होती है, वही परासिद्धि है, इसमें संशय नहीं है। इसीलिए शास्त्रों के पारङ्गत मनस्वी विद्वान् वाच्य और वाचक की एकता स्वीकार करते हुए, महादेव जी को प्रणवरूप कहते हैं।" पाठकों को जिज्ञासा हो सकती है कि जब सभी नाम शिव जी के ही हैं तो केवल 'ओम् नाम' से उपासना करने का आदेश शिवपुराण में ही क्यों है ? इस प्रश्न के उत्तर के रूप में यह कहा जा सकता है कि इस आदेश के दो मुख्य कारण ये हैं –

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(१) पहला यह कि अकेले 'ओम्' नाम में ही शिव जी के सभी गुण आ जाते हैं और उपासक को अलग–अलग गुणों को लेकर उनके अलग–अलग नामों को लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। ओम् का ज्ञान ही शिव का ज्ञान है, जैसा कि भगवान् शिव ने स्वयं ही, **''प्रणव अर्थ परिज्ञानम् एव ज्ञानं मदात्मकम्''** के द्वारा उपदेश दिया है (२) दूसरा कारण यह है कि महेश्वर का वेदोक्त नाम 'ओम्' ही है। जैसा कि यजुर्वेद अध्याय–४०, के अन्तिम मंत्र में– **'ओम् खं ब्रह्म'** के द्वारा सभी मनुष्यों को उपदेश दिया गया है।

हृदय गुहा में शिव

उपर्युक्त वेद मंत्र में ओम् नाम वाले परमात्मा को आकाश के समान सर्वत्र व्यापक कहा गया है। उपासक जानना चाहेंगे कि सर्व व्यापक का ध्यान कैसे किया जायेगा? इस प्रश्न के सम्बन्ध में 'वायवीय संहिता' पूर्वखण्ड की इस पंक्ति को देखना चाहिए– **''गुहायां निहितश्चापि जन्तोरस्य महेश्वरः''** अर्थात् ये अविनाशी, जीव की हृदय–गुफा में निवास करते हैं। इसी उपदेश को शिव जी के शिष्य भगवान् कृष्ण ने भी गीता (अध्याय १८/६१) में इन सुप्रसिद्ध शब्दों में दोहराया है– **''ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति''**। अतः उपासकों को यह जान लेना चाहिए कि ओम्शङ्कर का ध्यान हृदय स्थान में करना, शिवपुराण तथा गीता दोनों के अनुसार ठीक है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(१६) प्रणव ही मन्त्राधिराज है—

शिव पुराण की कैलास—संहिता से ही ओंकार के विषय में जो सरल तथा उपयोगी बातें है उन्हें बतलाने का प्रयास किया जा रहा है। कैलास—संहिता में एक प्रकरण 'प्रणव जप के अधिकार में विरजाहोम, गायत्री—जप—कथन'' नाम का है। उसमें प्रणव सम्बन्धी बहुत सी उपयोगी बातें बतलाई गई हैं। उसमें शंकर भगवान् ने प्रणव को 'मन्त्राधिराज—महावीज'' अपने मुखारविन्दु से कहा है तथा प्रणव के साथ अपने स्वरूप की एकता भी बतलाई है, वह उपदेश इस प्रकार है :

''सा व्याहृतिभ्य: संजाता, तास्वेव विलयं गता:।
ताश्च प्रणव—सम्भूता: प्रणवे विलयं गता।।
प्रणव: सर्ववेदादि: प्रणव: शिव वाचक:।
मन्त्राधिराज राजश्च महावीजं मनु: पर:।।
शिवो वा प्रणवो ह्येष प्रणवो वा शिव: स्मृत:।
वाच्य वाचकयोर्भेदो, नात्यन्तं विद्यते यत:''।।

गायत्री की उत्पत्ति के विषय में उपदेश चल रहा है। यहाँ यह कहा गया है कि वह गायत्री व्याहृतियों से उत्पन्न हुई तथा उसी में लीन हो जाती है। तब प्रश्न है कि व्याहृतियां कहां से उत्पन्न हुई ? यहाँ ऊपर के श्लोकों के द्वारा उत्तर दिया गया है कि प्रणव से ही व्याहुतियाँ उत्पन्न हुई। इस प्रकार प्रणव ही व्याहृति तथा गायत्री का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
मूल कारण सिद्ध हुआ। इतना ही नहीं प्रणव को सभी वेदों का आदि तथा परमात्मा का वाचक नाम भी कहा गया है। उपदेश में शङ्कर भगवान् ने प्रणव को मन्त्राधिराज तथा महावीज नाम से पुकारा है। यह महामन्त्र तथा सबका आदिकारण वह वीज है जिसके द्वारा सम्पूर्ण वृक्ष रूप संसार का प्रसार हुआ है। ऊपर के उपदेश के अनुसार शिव को प्रणव समझो अथवा प्रणव को शिव समझो, बात एक ही है क्योंकि वाच्य और वाचक में भेद नहीं होता। सम्पूर्ण शिव पुराण में कहीं भी शिव जी ने "राम" नाम को महामंत्र नहीं माना है। उन्होनें ओम् को ही मन्त्राधिराज तथा 'महाबीज' होना कहा है।

(१७) काशी में मरने वालों की मुक्ति ॐ नाम से ही होती है–

कैलास–संहिता में प्रणव के सम्बन्ध में जैसा कि ऊपर लिखा गया है बहुत सी महत्वपूर्ण बातें बतलाई गई हैं। उनमें एक बड़ी ही रहस्य की बात यह भी कही गई है कि काशी में शरीर त्यागने वालों की भी परमगति शिव जी ओङ्कार रूप मन्त्राधिराज के द्वारा ही प्रदान करते हैं। वह उपदेश इस प्रकार है :–

एनमेव महा मन्त्रम् जीवानाम् च तनु त्यजाम्।
काश्यां संश्रात्य मरणे दत्ते मुक्तिं परां शिवः।।

अर्थात् इसी ओङ्कार रूप महामन्त्र के द्वारा शङ्कर भगवान् काशी में शरीर त्यागने वालों की मुक्ति प्रदान करते हैं। शिवपुराण में ओङ्कार के द्वारा मोक्ष की प्राप्ति को बात उसी प्रकार कही गई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

है जैसे भगवान् कृष्ण के द्वारा गीता (८/१३) में :— "जो उपासक ॐ ऐसे एक अक्षर रूप ब्रह्म का जाप करते हुए शरीर त्याग करते हैं वे परम गति को प्राप्त होते हैं"। न केवल शिव पुराण तथा गीता में ही ओङ्कारोपासना के द्वारा मोक्षपद की प्राप्ति कहीं गई है अपितु वेद तथा शास्त्र और अन्य पुराणों में भी इस बात का प्रतिपादन किया गया है। अतः रामचरितमानस की ये पक्तियाँ एकदम मन गढ़न्त है :—

महामंत्र जोई जपत महेसू। कासी मुकुति हेतु उपदेसू।।

अर्थात् शिव जी 'राम' नाम महामंत्र को जपते हैं। उनके द्वारा इस नाम का उपदेश काशी में मुक्ति का कारण है।

(१८) प्रणव के विषय में स्कन्द जी का उपदेश :

शिवपुराण में ही वामदेव जी को उपदेश देते हुए स्कन्द जी ने इस प्रकार कहा :

प्रणवार्थः शिवः साक्षात् प्राधान्येन प्रकीर्तितः।
श्रुतिषु स्मृति शास्त्रेषु, पुराणेषु आगमेषु च।।

अर्थात शङ्कर ने ही प्रणव के अर्थों का वर्णन किया है यह बात श्रुति, स्मृति, शास्त्र, पुराण तथा वेदों ने भी कही है। स्कन्द जी ने हाथ उठाकर शपथ लेते हुए कहा है कि संसार में सभी मनुष्य प्रणव तथा शङ्कर के स्वरूप को भूल गये हैं इसलिए दुख भोग रहे हैं। वह कथन इस प्रकार है :—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"लोकोऽस्मिन् पशवः सर्वे नाना शास्त्र विमोहिताः।
वंचिताः परमेशस्य माययाति विचित्रया।।
न जानन्ति परं साक्षात् प्रणवार्थ महेश्वरम्।
सगुणं निर्गुणं ब्रह्म त्रिदेव जनकं परम्।।

अर्थात् इस लोक में मनुष्य नाना प्रकार के शास्त्रों को पढ़कर इस प्रकार मोह में फँस गया है कि महेश्वर की विचित्र माया को समझने से वंचित रह जाता है। आज मनुष्य को यह भी पता नहीं है कि साक्षात् प्रणव ही शिव रूप है जिसके द्वारा त्रिदेव अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु और महेश की उत्पत्ति हुई, जिसे सगुण और निर्गुण—ब्रह्म भी कहा जाता है। इस उपदेश से इतनी बातें स्पष्ट हो जाती हैं :— (१) ओम् ही ब्रह्म है। (२) ॐ ही सगुण तथा निर्गुण है (३) ॐ ही ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश की उत्पत्ति का कारण है (४) शिव और ओम् में अभेद है (५) मोह के कारण ही ओम् के सच्चे स्वरूप को लोग भूल बैठें हैं (६) मोह का कारण नाना शास्त्रों का पढ़ना है।

ऐसी दशा में इस सम्बन्ध में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है। सत्य को ग्रहण करने वाले पाठकों के लिए यह उपदेश बतला रहा है कि मानव मात्र का परम कर्तव्य मोह को त्याग कर ओम् के सच्चे स्वरूप को जानना ही है। नाना शास्त्रों के द्वारा बुद्धि भ्रमित होने की बात जो कही गई है वह उन शास्त्रों के विषय में है जो ओम् के स्वरूप को ठीक—ठीक प्रतिपादित नहीं करते तथा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
जिनके द्वारा नाना प्रकार की वेद विरूद्ध पूजाएँ उपस्थित हो गई हैं। प्राचीन वैदिक साहित्यों के अध्ययन से पता चलता है कि सभी वैदिक साहित्य ओङ्कार की उपासना पर पूर्णरूप से जोर देते हैं। केवल नवीन ग्रन्थों में ही ओङ्कार की प्रधानता को लघु कर देने का प्रयास कर दिया गया है।

(१९) स्कन्द जी के द्वारा ओङ्कार के छः प्रकार के अर्थों पर प्रकाश डालना

कैलास—संहिता में ही स्कन्द जी ने वामदेव जी को यह उपदेश दिया था कि मनुष्यों को ओम् के छः प्रकार के अर्थों का ज्ञान करना चाहिए। इस उपदेश को सुनकर वामदेव जी ने षडानन से यह जानना चाहा कि वे छः प्रकार के अर्थ कौन—कौन से हैं? इस प्रश्न का उत्तर उन्होने इस प्रकार दिया — 'हे मुने! वे छः प्रकार के अर्थ इस प्रकार हैं :— (१) मन्त्र रूप (२) यन्त्र रूप (३) देवार्थ रूप (४) प्रपञ्चार्थ रूप (५) गुरू रूप (६) शिष्य रूप। हे मुनिवर! जिस मन्त्र के विज्ञान मात्र से पुरूष श्रेष्ठ ज्ञानी हो जाता है उस मन्त्र के विषय में सुनिये :—

(१) मन्त्र रूप : प्रथम स्वर, पंचम स्वर तथा पवर्ग का पांचवाँ, विन्दु तथा नाद, इन वर्णों को वेदों में ओम् कहा गया है।'' पाठक देखेगें कि यहाँ षडानन जी ने उन छः प्रकार के अर्थों का वर्णन करते हुए सर्वप्रथम मन्त्राधिराज ओम् का ही वर्णन आरम्भ किया है। प्रथम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
स्वर अर्थात् अकार, पांचवां स्वर अर्थात् उकार, पवर्ग का अन्तिम अर्थात् मकार, विन्दु तथा नाद, इन पांच वर्णों को वेदों में ओम् कहा गया है। यह परमात्मा का वेदोक्त नाम है।

(२) यन्त्र रूप : अब यन्त्र के विषय में सुनो! सबसे नीचे पीठ बनावें उसके ऊपर ''अकार'' फिर ''उकार'' फिर ''मकार'' बनावें। उसके मस्तक पर बिन्दु और अर्धचन्द्राकार नाद बनावें। इस प्रकार यन्त्र खींच कर ओङ्कार को स्थित करें। हे मुने! इस यन्त्र के द्वारा सभी कामनाएँ सिद्ध होती हैं।

(३) देवार्थ रूप : हे वामदेव! सुनो! स्वयं भगवान् शङ्कर द्वारा कहा गया अत्यन्त गूढ़ देवार्थ तुम्हारे प्रेम के कारण बतलाता हूँ। 'सद्योजातं प्रपद्यामि' यहाँ से आरम्भ करके 'सदाशिवोम्' तक जो पाँच मन्त्र हैं, श्रुति ने प्रणव को इन सबका वाचक कहा है। इन्हें ब्रह्मरूपी पाँच सूक्ष्म देवता समझना चाहिए। इन्हीं का शिव के मूर्ति के रूप में भी विस्तार पूर्वक वर्णन है...........इत्यादि। (शिव जी के पाँचों मंन्त्रों को इसी पुस्तिका के अध्याय–४ के अन्त में देखें)।

(४) प्रपञ्च रूप : स्थूलरूप में प्रकट जो यह जगत–प्रपञ्च है, इसको जिसने पाँच रूपों द्वारा व्याप्त कर रखा है, वह ब्रह्म अपने उन रूपों के साथ ब्रह्मपञ्चक नाम धारण करता है। मुनिश्रेष्ठ! पुरूष, श्रोत्र, वाणी, शब्द और आकाश–इन पाँचों को ब्रह्म ने ईशानरूप से व्याप्त कर रखा है। मुनिश्वर! प्रकृति, त्वचा, पाणि, स्पर्श और वायु–इन पाँचों को ब्रह्म ने पुरूषरूप से व्याप्त कर रखा है। अहंकार, नेत्र, पैर,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
रूप और अग्नि–ये पाँच अघोररूपी ब्रह्म से व्याप्त है। बुद्धि, रसना, पायु, रस और जल–ये वामदेवरूपी ब्रह्म से नित्य व्याप्त रहते हैं। मन, नासिका, उपस्थ, गन्ध और पृथ्वी–ये पाँच सद्योजातरूपी ब्रह्म से व्याप्त हैं। इस प्रकार यह जगत पञ्चब्रह्मस्वरूप है।

(५) गुरू रूप : शिवपुराण के कैलाश–संहिता में, जहाँ छः प्रकार के ओङ्कार का स्वरूप या अर्थ को जानने की बात कही गई है, जैसा कि पूर्व पंक्तियों में – मन्त्र, यन्त्र, देवता तथा प्रपञ्च के सम्बन्ध में बताया गया है, वहाँ गुरू–रूप के बारे में यह श्लोक है :–

''यन्त्रं तु देवतारूपं देवता विश्वरूपिणी।
विश्वरूपो गुरूः प्रोक्तः शिष्यो गुरूवपुः स्मृतः।।''

भाव यह है कि यन्त्र देवता रूप है, देवता विश्वरूप है और गुरू विश्वरूप है तथा शिष्य गुरू का ही एक शरीर है। कैलाश–संहिता में ही गुरू के सम्बन्ध में दूसरा उपदेश इस प्रकार है :–

''यो गुरूः स शिवः प्रोक्तो यः शिवः स गुरूः स्मृतः।
इति निश्चित्य मनसा स्वविचारं निवेदयेत्।।''

भाव यह है कि जो गुरू है वह शिव है और जो शिव है वह गुरू है। इस प्रकार शिष्य को मन में विचार करके गुरू से निवेदन करना चाहिए। कैलाश–संहिता में ही गुरू–पूजन के सम्बन्ध में इस प्रकार का उपदेश है :–

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"पंचोपचारैः संपूज्य शिरसा श्रीगुरूं बुधः।
प्रणवं श्रीचतुर्थ्यंतं नमोऽन्तं प्रणमेत्ततः।।"

भाव यह है कि मतिमान शिष्य का कर्त्तव्य है कि वह नत मस्तक होकर विनम्रभाव से पञ्चोपचार द्वारा श्री गुरूदेव का पूजन करें। "प्रणव" लगाकर 'श्री' पूर्व में—चतुर्थि विभक्ति लगाकर अन्त में 'नमः' करके—'ॐ श्री गुरूवे नमः' इस प्रकार उच्चारण करता हुआ श्री गुरूदेव की पूजा करें।

गुरू के गुण : कैलाश—संहिता में ही गुरू के कुछ गुणों पर प्रकाश डाला गया है जो संक्षेप में इस प्रकार है – व्रत आदि में तत्पर, शान्त, तपस्वी, जितेन्द्रिय, पवित्र आचरण वाला, वेद में सत्य निष्ठा रखने वाला, विषयों से विरक्त, लोक और परलोक की इच्छा से दीन, देवता और ब्राह्मणों में भक्ति रखने वाला, शिवव्रत को धारण करने वाला, सम्पूर्ण शास्त्र के तत्व का ज्ञाता, वेदान्त ज्ञान को रखने वाला, यति, श्रेष्ठ बुद्धिवाला महापुरूष को आचार्य रूप में ग्रहण करना चाहिए।

(६) शिष्य रूप : पूर्व में लिखा गया है कि 'शिष्यो गुरूवपुः स्मृतः' अर्थात् शिष्य गुरूका शरीर ही है। भाव यह है कि गुरू शिव रूप है और शिष्य गुरू का शरीर है, इस प्रकार शिष्य भी शिवरूप ही हो जाता है। गुरू से दीक्षा प्राप्त करके शिष्य गुरू के समान ही गुणवान् हो जाता हैं। शैव लोगों की दृष्टि में गुरू तथा शिष्य का जो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
सम्बन्ध है वह शिव के सम्बन्ध के समान ही है।

शिष्य के गुण : उपरोक्त गुणों से सम्पन्न आचार्य को बतलाने के पश्चात् कैलाश–संहिता में ही शिष्य के गुण और आचार पर इन शब्दों में प्रकाश डाला गया है :–

"दीर्घदण्डप्रणामाद्यस्तोषयेद्यत्नतः सुधीः।
शान्तादिगुणसंयुक्तः शिष्यः सौशील्यवान् वरः।।"

भाव यह है कि शान्ति इत्यादि गुणों को रखने वाला, शीलवान् तथा शक्तिसम्पन्न और बुद्धिमान शिष्य को चाहिए कि अपने गुरू को ही शिव समझ कर उनके सामने एक दीर्घ–दण्ड के समान भूमि पर लेट कर प्रणाम करें और हर प्रकार से गुरू को सन्तुष्ट करें।

गुरू द्वारा मन्त्र की दीक्षा : समर्थ गुरू को चाहिए कि अपने शिष्य को प्रणव के सम्बन्ध में उपदेश दे। इस संदर्भ में कैलाश–संहिता का यह श्लोक देखना चाहिए :–

"प्रणवं त्रिप्रकारं तु ततस्तस्यार्थमादिशेत्।
षड्विधार्थ परिज्ञानसहितं गुरूसत्तमः।।"

भाव यह है कि गुरू को चाहिए कि 'प्रणव' का तीन रूप अर्थात् स्थूल, सूक्ष्म और परम् इनके विषय में शिष्य को बतावें और प्रणव के छः प्रकार के अर्थ अर्थात् – (१) मन्त्र रूप (२) यन्त्र रूप (३) देवता रूप (४) प्रपञ्च रूप (५) गुरू रूप तथा (६) शिष्य रूप के सम्बन्ध में भी उपदेश देवें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिव कथित ध्यान, स्मरण और उसका फल : पाठकों की जानकारी के लिए भगवान् शिव के द्वारा उपदिष्ट ध्यान, जप, स्मरण इत्यादि के सम्बन्ध में, शिवपुराण के कैलाश–संहिता के ये श्लोक लिखे जा रहे हैं :–

"विचिन्त्य मध्यतस्तस्य दहरं व्योमभावयेत्।।
ओमितयेकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मां त्वया सह।
चिंतयेन्मध्यतस्तस्य नित्यमुद्युक्तमानसः।।
एवंविधोपासकस्य मल्लोकगतिमेव च।
मत्तो विज्ञानमासाद्य मत्सायुज्यफलं प्रिये।।"

इस कथन का भाव यह है कि हे गौरी! उपासक को चाहिए कि हृदय कमल के मध्य में उस दहर प्रकाश की भावना करें। **'ॐ'** इस एकाक्षर मन्त्र का उच्चारण करें। तुम्हारे साथ ही मेरा स्मरण करें। इस विधि से जो उपासक मेरा ध्यान, जप और स्मरण करता है उसका यह फल होता है, कि वह मेरे ही लोक की प्राप्ति करके अन्त में मेरे ही 'सायुज्य मोक्ष' पद की प्राप्ति भी कर लेता है।

(२०) शिव–पद के अधिकारी कौन ?

पूर्व लिखित उपदेश देने के पश्चात् अन्य कई विषयों पर प्रकाश डालते हुए षडानन जी ने कहा कि हे मुने! शिव–पद की प्राप्ति केवल उन्हीं को ही सकती है :–

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'सदा शिवोपासकानाम् प्रणव—आसक्त चेतसाम्'' — अर्थात् जो रागरहित ज्ञानी पुरूष शिव जी की उपासना करते हुए अपने मन को प्रणव अर्थात् ओङ्कार में लगाये रहता है। आगे इस पद को प्राप्त करने पर क्या होता है ?—इस सम्बन्ध में इस प्रकार का उपदेश है :— 'हे मुनिवर! भगवान् शिव की कृपा से वे प्रणवोपासक उस पद को प्राप्त होकर ब्रह्म—स्वरूप परमात्मा के साथ, अनेक प्रकार के भोगों का उपभोग करके महाप्रलय में शंकर की साम्यता को प्राप्त होते और पुन: संसार रूपी समुद्र में नहीं गिरते हैं।''

वामदेव जी के प्रश्नों का उत्तर देते हुए षडानन जी ने जैसा कि पूर्व बतलाया गया है कि छ: प्रकार के अर्थों का वामदेव को बोध कराया, शंकर तथा ओङ्कार में अभेद को बतलाया, ओङ्कार की उपासना से मोक्ष की प्राप्ति का कथन किया तब अन्त में निम्न शब्दों के द्वारा अपना महत्वपूर्ण उपदेश समाप्त किया :—

''शिव उपदिष्ट मार्गेण, यन्त्ररूपं विभावयेत्।
प्रणवं परमं मन्त्राधिराजं शिव रूपिणम्।। (कै० सं०)

अर्थात् हे वामदेव! भगवान् द्वारा उपदिष्ट मार्ग से यन्त्र रूप का विचार करना चाहिए। यह मन्त्राधिराज प्रणव अर्थात् ओङ्कार साक्षात् शिव स्वरूप ही हैं।

(२१) ओङ्कार के सम्बन्ध में कुछ अन्य आदेश

(१) गायत्री मन्त्र से पूर्व ओम् मन्त्र (ॐ) का जप करना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
आवश्यक है। इस सम्बन्ध में, विद्येश्वर—संहिता अध्याय—१३, में इस प्रकार का आदेश है—"अच्छे मठ में, मन्त्रालय में, देवालय में, घर में अथवा अन्य किसी उत्तम स्थान में स्थिरता पूर्वक बैठकर पहले प्रणव का जप करें तत्पश्चात् गायत्री मन्त्र को जपें। प्रणव के 'अ', 'उ' और 'म्' इन तीनों अक्षरों से जीव और ब्रह्म की एकता का प्रतिपादन होता है—इस बात को जान कर ओम् का जाप करना चाहिए। जपकाल में यह भावना करनी चाहिए कि "हम तीनों लोकों का सृष्टि करने वाले ब्रह्मा, पालन करने वाले विष्णु तथा संहार करने वाले रूद्र की—जो स्वयं प्रकाश चिन्मय हैं—उपासना करते हैं। यह ब्रह्म स्वरूप ओङ्कार हमारी कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों की वृत्तियों को, मन की वृत्तियों को तथा बुद्धि की वृत्तियों को सदा भोग और मोक्ष प्रदान करने वाले धर्म और ज्ञान की ओर प्रेरित करे।" प्रणव के इस अर्थ का बुद्धि के द्वारा चिन्तन करता हुआ, जो इसका जप करता है, वह निश्चय ही ब्रह्म को प्राप्त कर लेता है।

(२) साधारण लोगों के लिए आदेश : "अथवा अर्थ अनुसंधान के बिना भी प्रणव का नित्य जप करना चाहिए। इससे ब्राह्मणत्व की पूर्ति होती है" (वि० सं० अ० १३)।

"जो अर्थ का अनुसन्धान न करके केवल मन्त्र का जप करता है उसे निश्चय ही योग की प्राप्ति होती है।" (वि० सं० अं०—१७)

(३) सन्यासियों के लिए आदेश : 'संन्यासी पुरूष नित्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रात:काल बारह हजार ओम् का जप करें। यदि एक दिन इस नियम का उल्लंघन हो जाए तो दूसरे दिन उसके बदले में, उतना मंत्र और अधिक जपना चाहिए और सदा इस प्रकार जाप को चलाने का प्रयत्न करना चाहिए''...........इत्यादि।

(४) शिव भक्तों को ओङ्कार उपासना करनी चाहिए : शिव पुराण के कैलाश संहिता में, यह प्रत्यक्ष रूप से आदेश है कि रूद्राक्ष और भस्म धारण करने वाले शिव भक्तों को ओङ्कार की ही उपासना करनी चाहिए। पाठकों की जानकारी के लिए, शिवपुराण से उन मूल श्लोकों को लिखा जा रहा है :–

''त्वमपि श्रद्धया भक्त्या प्रणवेष्वेव सादरम्।।
उपविश्य च तान्सर्वान्संयोज्य परमेश्वरे।
शिवाचारं ग्राहयस्व भूतिरूद्राक्षमिश्रितम्।।

भाव यह है कि रूद्राक्ष और विभूति को धारण कर और दूसरों से करवा कर, शिवाचार को अपनाकर, आदर पूर्वक श्रद्धा और भक्ति सहित ओङ्कार में निष्ठा रखकर, परमेश्वर शिव की उपासना की शिक्षा देनी चाहिए।

(५) प्लुत लक्षण वाला ओङ्कार ही प्रथम नाद है : रूद्र संहिता के सृष्टि खण्ड में यह श्लोक आया है :–

''तदा समभवत्तत्र नादौ वै शब्दलक्षण:।।
ओम् ओम् इति सुरश्रेष्ठात्सुव्यक्त: प्लुतलक्षण:।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाव यह है कि उस सर्व शक्तिमान् परमात्मा (शिव) से सर्वप्रथम शब्दगुण वाला नाद उत्पन्न हुआ। ओम् की ध्वनि जो बार—बार हुई वह प्लुतलक्षण वाला 'ओ३म्' ही था।

(६) रूद्रदेव का ज्ञान केवल एकाक्षर ओम् से ही सम्भव है : रूद्र संहिता सृष्टि खण्ड में ये श्लोक आये हैं :—

चिन्तया रहितो रूद्रो वाचो यन्मनसा सह।
अप्राप्य तन्निवर्तन्ते वाच्यस्त्वेकाक्षरेण सः।।

भाव यह है कि रूद्रदेव का ज्ञान प्राप्त करने में मन और वाणी असमर्थ हैं क्योंकि वे चिन्तन के विषय नहीं है। उस दुर्लभ प्रभु के जानने का बस एक ही उपाय है कि एक अक्षर वाले 'ॐ' की जानकारी प्राप्त की जाए।

(७) ओंकार में त्रिदेव

इस प्रकार ओंकार के द्वारा ही परमात्मा (रूद्र) को जानने का उपदेश देने के पश्चात् ओम् के साथ त्रिदेव अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु और महेश का जो सम्बन्ध है उस पर इस प्रकार प्रकाश डाला गया है :—

'एकाक्षर अकार में बीज स्वरूप ब्रह्मा जी हैं। एकाक्षर उकार में परम कारण विष्णु जी हैं। एकाक्षर मकार में नील कण्ठ भगवान् शंकर हैं। अकार से सृष्टि की उत्पत्ति का ज्ञान होता है। उकार जगत् को मोहित करने वाला है। मकार नित्य अनुग्रह करने वाला शंकर हैं। इस उपदेश से प्रत्यक्ष हो गया कि हिन्दुओं के तीन साकार देव ब्रह्मा,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विष्णु और महेश जो क्रम से सृष्टि के कर्ता, धर्ता और हर्ता माने जाते हैं। वे सब ओङ्कार से ही उत्पन्न होने के कारण ओङ्कार स्वरूप ही हैं। फिर 'स्वर्ण अण्ड' इत्यादि से धीरे–धीरे स्थूल सृष्टि की उत्पत्ति का वर्णन है। इससे पता चला कि उसी ओम् शब्दब्रह्म से ही आगे चलकर स्थूल तथा सूक्ष्म जगत की उत्पत्ति हुई।

ऊपर के उपदेशों से चक्षुः सम्पन्न व्यक्ति देखेंगें कि जो लोग ओङ्कारोपासना को केवल निर्गुण निराकार उपासना बतलाते हैं वह बिल्कुल निराधार तथा असत्य है। उनमें वैदिक–ज्ञान तो दूर रहे, पौराणिक–स्वाध्याय तथा मनन का भी अभाव ही प्रतीत होता है।

(८) ओङ्कार तथा शङ्कर जी का शरीर

आगे चलकर संस्कृत साहित्य के सभी स्वरों तथा व्यञ्जनों का सम्बन्ध, भगवान् शंकर के शरीर के भिन्न–भिन्न अङ्गों के साथ दिखलाया गया है। वहां ओम् के अ, उ तथा म अक्षरों के सम्बन्ध में इस प्रकार कहा गया है :– "अकारः तस्य मूर्धा..........उकारो दक्षिणम् श्रोत्रम्, ऊकारो वाम उच्यते.............मकारो हृदयम् शम्भो महादेवस्य योगिनः"....................इत्यादि अर्थात् उस महायोगी महादेव शंकर का–अकार ही शिर है, उकार कान है तथा मकार हृदय है। मानव शरीर के अन्दर मस्तिष्क और हृदय ही प्रधान माने जाते हैं। विचार और प्रेम ये दोनों क्रम से मूर्धा और हृदय के वस्तु हैं। इन्हीं विचार और प्रेम के द्वारा ज्ञान, कर्म और उपासना होती है।

RajGuru Math; Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मनुष्य को मनुष्य बनाने वाले गुणों में प्रेम और विचार का ही मुख्य–स्थान है। इनके बिना मनुष्य मानव नहीं दानव ही है। ओम् की उपासना करने से, उपासना के अनुरूप उपासक की बुद्धि (मेधा) तथा प्रेम (हृदय की विशालता) में निश्चय ही वृद्धि होगी। 'उकार' को महादेव का कान कहा गया है। कान का काम सुनना है। अतः शब्द तथा आकाश से इसका सम्बन्ध है। इसके द्वारा आकाश के समान ही विशालता और प्रसार की भावना आती है। इस प्रकार प्रणवोपासक में मेधा, प्रेम तथा विशालता प्रचुर मात्रा में प्रवेश कर जाते हैं तब वह पूर्ण मानव बनकर अपना तथा संसार का कल्याण करने योग्य बन जाता है – यह भाव है।

(९) ओङ्कार के द्वारा साकार शिव की पूजा : रूद्र संहिता, सृष्टि–खण्ड में शिव जी की पूजा के सम्बन्ध में इस प्रकार का उपदेश है –

सर्वत्र प्रणवेनैव षडङ्गन्यासमाचरेत्।।....
तेषु तेषु च सर्वेषु क्षिपेत्तोयं सुशीतलम्।
प्रणवेन क्षिपेत्तेषु द्रव्याण्यलोक्य बुद्धिमान्।।....
लिङ्गशुद्धिं ततः कृत्वा मुदायुक्तो नरस्तदा।
यथोचितं तु मन्त्रोघैः प्रणवादिनमोंतकैः।।....
घृतेन तु तथा पूज्य सर्वकामहितावहम्।
पुण्यैर्द्रव्यैर्महादेवं प्रणवेनाभिषेचयेत्।।....

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रणवेनैव मन्त्रेण पूजयेल्लिंगमूर्द्धनि।
धूपैदीपैश्च् नैवेद्यैस्ताम्बूलैः सुन्दरैस्तथा।।

उपर्युक्त श्लोकों के साथ कई अन्य श्लोक भी हैं जो कि पूजा की दृष्टि से अध्ययन किए जा सकते हैं। जो जिज्ञासु जन जानकारी प्राप्त करना चाहते हों वे उपर्युक्त ठिकाने पर विशेष अध्ययन के द्वारा जान सकते हैं। यहाँ उस पूजा विधि में से जो कुछ मुख्य पंक्तियाँ थीं, वे मूल संस्कृत में ही उपस्थित कर दी गई हैं। जिन श्लोकों को ऊपर लिखा गया है उनका भाव संक्षेप में दर्शाया जा रहा है – शिवलिङ्ग की पूजा करते समय ओङ्कार के सहित षडंग–न्यास करना चाहिए। नवीन–घट स्थापित करने के पश्चात्, उन सब पात्रों में शीतल जल द्रव्यों को ग्रहण करके, प्रणव के उच्चारण के साथ भर दें। तब उपासक लिङ्ग की शुद्धि करें और मन से ओङ्कार सहित नमस्कार करें, तब घृत के द्वारा भगवान् शिव जो सम्पूर्ण कामनाओं के देने वाले हैं, उनकी पूजा पवित्र द्रव्यों के द्वारा प्रणव पूर्वक करनी चाहिए। धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल शिवलिङ्ग पर चढ़ाना चाहिए और चढ़ाते समय प्रत्येक बार प्रणव का उच्चारण करना चाहिए।

पाठक यह प्रत्यक्ष अनुभव करते होगें कि शिवपुराण में कहा गया है कि केवल 'ओम्' नाम के उच्चारण मात्र से शिव जी की पूरी पूजा आरम्भ से अन्त तक समाप्त की जा सकती है। अतः जिन लोगों की यह मिथ्या धारणा बन गई है कि 'ओम्' शब्द किसी मन्त्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में जोड़कर ही प्रयोग में लाया जाता है परन्तु केवल 'ओम्' नाम से पूजा नहीं हो सकती है वह अशुद्ध सिद्ध हो जाती है। यह कितना सुन्दर भगवान् का आदेश और व्यवस्था है कि अपठित लोग भी जो वैदिक मंत्रों का उच्चारण और विनियोग नहीं जानते हैं वे केवल 'ओम्' के उच्चारण से ही सम्पूर्ण पूजा विधिवत् कर सकते हैं। कितने दुर्भाग्य की बात है ! कि शिवोपासना की सरलतम विधि के रहते हुए भी लोग आज स्वयं गुमराह हो रहे हैं और दूसरे को भी गुमराह कर रहे हैं।

(१०) ओम् का ध्यान : 'ॐ' के ध्यान के सम्बन्ध में कैलाश—संहिता के अन्तर्गत इस प्रकार का आदेश है :—

ब्रह्मरन्ध्रान्तमुच्चार्य ध्यायेदोङ्कारगोचरम्।
शुद्धस्फटिकसङ्काशं देवं निष्कलमक्षरम्।।

भाव यह है कि मूलाधार चक्र से उठा हुआ नाद बारह चक्र की ग्रन्थि को तोड़कर ब्रह्मरन्ध्र से उच्चारण करता हुआ उस, अगोचर परमेश्वर ओङ्कार का ध्यान ऐसा करना चाहिए कि वह शुद्ध स्फटिक मणि के तुल्य है। वह कला से रहित और एक अक्षर 'ॐ' स्वरूप वाला है।

(११) ओम् के उच्चारण सहित शिवलिङ्ग की स्थापना हो :

विद्येश्वर—संहिता अध्याय—११, में शिवलिङ्ग स्थापना करने के सम्बन्ध में उपदेश है। वहाँ इस प्रकार का आदेश मिलता है —''स्थावर—जङ्गम सभी जीवों को यत्नपूर्वक सन्तुष्ट करके एक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
गड्ढे में सुवर्ण तथा नौ प्रकार के रत्न भरकर सद्योजातादि वैदिक मन्त्रों का उच्चारण करके परम कल्याणकारी महादेव जी का ध्यान करें। तत्पश्चात् नादघोष से युक्त महामन्त्र ओङ्कार (ॐ) का उच्चारण करके उक्त गड्ढे में शिवलिङ्ग की स्थापना करके उसे पीठ से संयुक्त करें। ....इसी प्रकार वहाँ परम सुन्दर मूर्ति की भी स्थापना करनी चाहिए।..........अन्तर इतना है कि – लिङ्ग प्रतिष्ठा के लिए प्रणवमंत्र के उच्चारण का विधान है, परन्तु मूर्त्ति की प्रतिष्ठा पञ्चाक्षर मंत्र से करनी चाहिए। जहाँ लिङ्ग की प्रतिष्ठा हुई है, वहाँ भी उत्सव के लिए बाहर सवारी आदि निकालने के निमित्त मूर्त्ति को रखना आवश्यक है।''

(१२) ओङ्कार जप शङ्कर जी की प्रदक्षिणा है : प्राय: लोग किसी पवित्र स्थान अथवा मूर्त्ति के चारों ओर शरीर से घूम जाने को ही प्रदक्षिणा समझते हैं परन्तु शिवपुराण में जहाँ शिवलिंग माहात्म्य का वर्णन है वहाँ प्रदक्षिणा के सच्चे स्वरूप को इन शब्दों के द्वारा व्यक्त किया गया है :–

अध्यक्षं शिवधर्मेषु प्रदक्षिणमितीरितम्।
क्रियया जप रूपंहि प्रणवं तु प्रदक्षिणम्।।

शिवधर्म में प्रदक्षिणा का सबसे अधिक महत्व है। इस धर्म में क्रियायुक्त जप स्वरूप ओंकार को ही प्रदक्षिणा माना गया है। इस महत्वपूर्ण उपदेश से यह प्रकट हुआ कि ओंकार जप करने वाला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सदा शङ्कर भगवान् की प्रदक्षिणा ही कर रहा है।

शिवपुराण में जो मुक्ति की परिभाषा दी गई है वह पतञ्जलि के योग दर्शन से मिलती–जुलती सी है परन्तु आज मुक्ति के स्वरूप को मन--गढ़न्त ढ़ंग से शिष्यों को बताया जाता है। शिवपुराण में प्रणव पञ्चाक्षर मंत्र के माहात्म्य का जहाँ उल्लेख है वहाँ इस प्रकार मुक्ति के स्वरूप को बतलाया गया है :–

मुक्तिरात्मस्वरूपेण स्वात्मारामत्वमेव हि।

अर्थात् स्वरूपस्थिति को मुक्ति कहते हैं अथवा आत्मा द्वारा आत्मा की उपलब्धि मुक्ति है।

प्रणव पञ्चाक्षर मन्त्र से देवपद की प्राप्ति

शिवपुराण में प्रणव पंचाक्षर मन्त्र से नाना प्रकार की सिद्धियों के अतिरिक्त देव पद की प्राप्ति की बात भी कही गई है। उसका वर्णन संक्षेप से दिया जा रहा है :–

दश लाख मन्त्र जप से ब्रह्मपद की प्राप्ति होती है। फिर दश लाख मन्त्र जप से विष्णु पद की प्राप्ति होती है, फिर दश लाख अधिक जप से रूद्र पद की प्राप्ति होती है। फिर दश लाख जप से ऐश्वर्य पद की प्राप्ति होती है, दश करोड़ जप से कारणब्रह्म की प्राप्ति होती है, इत्यादि सविस्तार वर्णन है। जपों की संख्या बढ़ाकर जीव पाँचों प्रकार के आवरण से बाहर निकलकर शिवलोक की प्राप्ति कर सकता है – यह भी उपदेश है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(२२) प्रणव के अर्थ पर विचार

शिवपुराण के विद्येश्वर संहिता के अध्याय १७ में, प्रणव के अर्थों पर सूत जी ने प्रकाश डाला है जो संक्षेप में इस प्रकार है :–

प्रो हि प्रकृतिजातस्य संसारस्य महोदधेः।
नवं नावांवरमिति प्रणववै विदुर्बुधाः।।
प्रः प्रपञ्चो न नास्ति वो युष्माकं प्रणवं विदुः।
प्रकर्षेण नयेद्यस्मान्मोक्षं वः प्रणवं विदुः।।
स्वजापकानां योगिनां स्वमन्त्रपूजकस्य च।
सर्वकर्मक्षयं कृत्वा दिव्यज्ञानं तु नूतनम्।।
तमेव माया रहितं नूतनं परिचक्षते।
प्रकर्षेण महात्मानं नवं शुद्धस्वरूपकम्।
नूतनं वै करोतीति प्रणवं तं विर्दुर्बुधाः।।

उपर्युक्त श्लोकों के भाव इस प्रकार हैं – 'प्र' नाम है प्रकृति से उत्पन्न संसाररूपी महासागर का। प्रणव इससे पार करने के लिए दूसरी (नव) नाव है। इसलिए इस ओंकार को 'प्रणव' की संज्ञा देते हैं।

भगवान् ओङ्कारेश्वर अपने उपासकों को स्वयं उपदेश दे रहे हैं – 'प्र–प्रपञ्च, न नहीं है, वः – तुम लोगों के लिये' अतः इस भाव को लेकर भी ज्ञानी पुरूष 'ओम्' को प्रणव नाम से जानते हैं। इसका दूसरा भाव यों है – 'प्र–प्रकर्षेण, न–नयेत्, वः–युष्मान्

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
मोदम् इति वा प्रणव: अर्थात् जो तुम सब उपासकों को बलपूर्वक मोक्ष तक पहुँचा देगा'' इस अभिप्राय से भी इसे ऋषि–मुनि 'प्रणव' कहते हैं। अजपा जप करने वाले योगियों के तथा अपने मन्त्र की पूजा करने वाले उपासक के समस्त अज्ञान नाश करके यह दिव्य नूतन ज्ञान देता है, इसलिए भी इसका नाम प्रणव है जैसे कि ''प्र'' (अज्ञान क्षयपूर्वक) ''नव'' (नूतन ज्ञान देने वाला)। उन मायारहित महेश्वर को ही नव अर्थात् नव कहते हैं। वे परमात्मा प्रकृष्ट रूप से नव अर्थात् शुद्ध स्वरूप है, इसलिए 'प्रणव' कहलाते हैं। प्रणव साधक को नव अर्थात् नवीन (शिवस्वरूप) कर देता है। इसलिए भी विद्वान पुरूष उसे प्रणव के नाम से जानते हैं अथवा प्रकृष्ठ रूप से नव–दिव्य परमात्मज्ञान प्रकट करता है, इसलिए वह प्रणव है। प्रणव का एक अर्थ इस प्रकार भी बताया गया है –

ब्रह्मादि स्थावरान्तानाम् सर्वेषां प्राणिनां खलु।
प्राण: प्रणव एव अयं तस्मात् प्रणव ईरित:।। (कै०सं०)

अर्थात हे देवि! सुनो, ब्रह्मा से लेकर स्थावर तक सभी प्राणियों का प्राण होने से परमेश्वर का नाम 'प्रणव' हुआ।

(२३) प्रणव का भेद तथा उपासना अधिकार

विद्येश्वर संहिता में सूत जी प्रणव के नाना प्रकार के भेदों को बतलाकर सन्यासियों तथा गृहस्थ जनों की उपासना के सम्बन्ध में इस प्रकार ऋषियों को उपदेश देने लगे :–

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रणवं द्विविधं प्रोक्तं सूक्ष्मस्थूल विभेदतः।।
सूक्ष्ममेकाक्षरं विद्यात्स्थूलं पञ्चाक्षरं विदुः।
सूक्ष्ममव्यक्तपञ्चार्णं सुव्यक्तार्णं तथेतरत्।।
जीवन्मुक्तस्य सूक्ष्मं हि सर्वसारं हि तस्य हि।
मन्त्रेणार्थानुसन्धानं स्वदेह विलयावधि।।
षट् त्रिंशत्कोटि जापी तु निश्चयं योगमाप्नुयात्।
सूक्ष्मं च द्विविधं ज्ञेयं ह्रस्वदीर्घ विभेदतः।।
अकारश्च उकारश्च मकारश्च ततः परम्।
बिन्दुनादयुक्तं, तद्धि शब्दकाल कलान्वितम्।।
दीर्घप्रणवमेवं हि योगिनामेव हृद्गतम्।
मकारं तन्त्रितत्वं हि ह्रस्वप्रणव उच्यते।।
शिवः शक्तिस्तयोरैक्यं मकारं तु त्रिकात्मकम्।
ह्रस्वमेवं हि जाप्यं स्यात्सर्वपापक्षयेषिणाम्।।
भूवायुकनकार्णोद्यौः शब्दाद्याश्च तथा दश।
आशान्वये दश पुनः प्रवृत्ता इति कथ्यते।।
ह्रस्वमेव प्रवृत्तानां निवृत्तानां तु दीर्घकम्।
व्याहृत्यादौ त मन्त्रादौ कामं शब्दकलायुतम्।।
वेदादौ च प्रयोज्यं स्याद्वन्दने सन्ध्ययोरपि।

भावार्थ : प्रणव के दो भेद बताये गये हैं – स्थूल और सूक्ष्म। एक अक्षर रूप जो 'ॐ' है, जो सूक्ष्म प्रणव जानना चाहिये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रणव

ॐ
(सूक्ष्म प्रणव)

ह्रस्व प्रणव = अ + उ + म्
= ओम्
(प्रवृत्त अथवा गृहस्थ के लिए)

ॐ नमः शिवाय
(स्थूल प्रणव).
(प्रवृत्ति तथा प्रवृत्ति—निवृत्ति संमिश्रित भाववालों के लिए)

दीर्घ प्रणव = अ + उ + म् + नाद + बिन्दु + शब्द + काल + कला (निवृत्त अथवा योगी संन्यासी के लिए)

ज्ञातव्य — प्रणव का दो भेद होता है — (१) सूक्ष्म (२) स्थूल। सूक्ष्म प्रणव (ॐ) एकाक्षर ओम् है। स्थूल प्रणव 'नमः शिवाय' मन्त्र है। सूक्ष्म प्रणव का पुनः दो भेद है — (१) ह्रस्व (२) दीर्घ। ह्रस्व प्रणव — अ, उ, म् = ओम् को कहते हैं। इसकी उपासना प्रवृत्त या गृहस्थ जन करते हैं। दीर्घ प्रणव — अ, उ, म नाद, बिन्दु, शब्द, काल, कला — इन आठों से युक्त प्रणव होता है। इसकी साधना योगी तथा सन्यासीजन को निवृत्तमार्गी कहे जाते हैं, वे करते हैं। स्थूल प्रणव — 'नमः शिवाय' मन्त्र को कहते हैं। इसकी उपासना प्रवृत्ति तथा प्रवृत्ति—निवृत्ति संमिश्रित भाव वाले लोग करते हैं। विशेष इस पुस्तक के पृष्ठ ५९ में देखें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और 'नमः शिवाय' इस प्रकार पाँच अक्षर वाले मन्त्र को स्थूल प्रणव समझना चाहिए। जिसमें पाँच अक्षर व्यक्त नहीं है, वह सूक्ष्म है और जिसमें पाँचों अक्षर सुस्पष्ट रूप से व्यक्त हैं, वह स्थूल है। जीवन्मुक्त पुरूष के लिए, सूक्ष्म प्रणव के जप का विधान है। वही उसके लिए समस्त साधनों का सार है। सूक्ष्म प्रणव के भी ह्रस्व और दीर्घ के भेद से दो रूप जानने चाहिए। अकार, उकार, मकार, बिन्दु, नाद, शब्द, काल और कला – इनसे युक्त जो प्रणव है, उसे 'दीर्घ प्रणव' कहते हैं। वह योगियों के हृदय में स्थित होता है। मकारपर्यन्त जो ओम् है, वह अ उ म्—इन तीनों तत्वों से युक्त है। इसी को 'ह्रस्व प्रणव' कहते हैं।

'अ' शिव है, 'उ' शक्ति है और मकार इन दोनों की एकता है। वह त्रितत्वरूप है, ऐसा समझकर ''ह्रस्वप्रणव'' का जप करना चाहिए। जो अपने समस्त पापों का क्षय करना चाहते हैं, उनके लिए इस ह्रस्व प्रणव का जप अत्यन्त आवश्यक है। प्रवृत्त पुरूषों को ह्रस्व प्रणव ही जप करना चाहिए और निवृत्त पुरूषों को दीर्घ प्रणव का। व्याहृतियों तथा अन्य मन्त्रों के आदि में इच्छानुसार शब्द और कला से युक्त प्रणव का उच्चारण करना चाहिए। वेद के आदि में और दोनों सन्ध्याओं की उपासना के समय भी ओङ्कार का उच्चारण करना चाहिए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(२४) प्रणव जप से प्राप्त होने वाली सिद्धियाँ

इसी सन्दर्भ में भगवान् सूत जी नें प्रणव की जप—उपासना से जो सिद्धियां प्राप्त होती हैं उनके सम्बन्ध में भी ऋषियों को बताया। उसके सम्बन्ध में, संक्षेप में पाठकों की जानकारी के लिए लिखा जा रहा है :—

“प्रणव का नौ करोड़ जप करने से मनुष्य शुद्ध हो जाता है। फिर नौ करोड़ का जप करने से वह पृथ्वी तत्व पर विजय पा लेता है। तत्पश्चात् पुनः नौ करोड़ का जप करके वह जल तत्व को जीत लेता है। पुनः नौ करोड़ जप से अग्नि तत्व पर विजय पाता है। तदनन्तर फिर नौ करोड़ का जप करके वह वायुतत्व पर विजयी होता है। फिर नौ करोड़ के जप से आकाश को अपने अधिकार में कर लेता है। इसी प्रकार नौ—नौ करोड़ का जप करके वह क्रमशः गन्ध, रस, रूप, स्पर्श और शब्द पर विजय पाता है, इसके बाद फिर नौ करोड़ का जप करके अहंकार को भी जीत लेता है। इस तरह एक सौ आठ करोड़ प्रणव का जप करके उत्कृष्ट बोध को प्राप्त हुआ पुरूष शुद्ध योग का लाभ करता है। शुद्ध योग से युक्त होने पर वह जीवन्मुक्त हो जाता है, इसमें संशय नहीं है। सदा प्रणव का जप और प्रणवरूपी शिव का ध्यान करते—करते समाधि में स्थित हुआ महायोगी पुरूष साक्षात् शिव ही है, इसमें संशय नहीं है।”

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(२५) प्रणव जप का स्त्रियों का अधिकार –

जिस प्रकार गीता में भगवान् कृष्ण ने स्त्रियों और शूद्रों की भी परमगति पाने की बात कही है उसी प्रकार शिवपुराण में भी पूर्ण उदारभाव स्त्री के सम्बन्ध में प्रत्यक्ष होते हैं। वहां इस प्रकार का वचन है :—

स्त्रीत्वापनयनार्थं तु पंच लक्ष जपेत् पुनः।
मन्त्रेण पुरषो भूत्वा क्रमान्मुक्तो भवेद्बुधः।।

अर्थात् स्त्री पांच लाख जप करे। इस जप के द्वारा वह पुरूष रूप में जन्म लेकर क्रम से मुक्त हो जायेगी। शिवपुराण में स्त्रियों को प्रणव मंत्र जपने का पूर्ण अधिकार दिया गया है, चाहे वह स्त्री सीधा मुक्ति पद न पाकर पुरूष योनि में जन्म लेकर ही पावें परन्तु यह बात तो सिद्ध हो गई कि स्त्रियाँ ओङ्कार—जप करने की अधिकारिणी हैं और प्रणव जप के निरन्तर अभ्यास और साधना से उत्तरोत्तर श्रेष्ठ जन्मों को ग्रहण करके अन्त में मोक्ष अवस्था को प्राप्त कर सकती हैं। इतना प्रत्यक्ष पौराणिक उपदेश होते हुए भी कुछ गुमराह व्यक्ति स्त्रियों को ओंकार—जप से वचिंत रखने का घृणित प्रयास करते हैं।

(२६) ओङ्कार जप से चारों वर्णों की उन्नति

प्रणव मंत्र का स्त्रियों को अधिकारिणी बताते हुए चारों वर्ण अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों को ओम् जप करके उत्तरोत्तर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उन्नति करने का उपदेश इस प्रकार है :—

'पाँच लाख प्रणव—पंचाक्षर मन्त्र का जप करने से क्षत्रिय अपने क्षत्रियत्व से ऊपर उठ जाता है। पुन: पांच लाख जप करने से अगले जन्म में ब्राह्मण होता है फिर पाँच लाख जप करने से सिद्धियों को प्राप्त करके मोक्ष पद को पा लेता है।''

''पाँच लाख जप करने से वैश्य, वैश्त्व से ऊपर उठ जाता है। फिर पाँच लाख जप करने से क्षत्रियत्व को प्राप्त होता है तथा पुन: पाँच लाख जप करने से क्षत्रियत्व से भी पृथक् हो जाता है फिर पाँच लाख जप करने से वह मन्त्रब्राह्मण की प्राप्ति करता है''

अब शूद्रों के सम्बन्ध में इस प्रकार का आदेश है :—

शूद्रश्चैव नमोन्तेन पञ्च विंशति लक्षत:।
मन्त्र—बिप्रत्वमापद्य पश्चाच्छुद्धो भवेद्द्विज:।।

अर्थात् शुद्र 'नम' शब्द जोड़कर पच्चीस लाख मन्त्र जपें। इस जप के द्वारा वह मन्त्र ब्राह्मण की प्राप्ति करने के पश्चात् द्विज हो जाता है। प्रणव—मन्त्र के द्वारा शूद्रत्व से द्विजत्व की प्राप्ति होना शिवपुराण में भगवान् शिव को अभिष्ट होने के कारण ही अङ्कित हैं। जब भगवान् ने ही अधिकार दिया है कि प्रत्येक मनुष्य जप, भक्ति और साधना के द्वारा अपनी उन्नति करता हुआ परम लक्ष्य अर्थात् मोक्ष तक की प्राप्ति कर ले तो फिर उन्हें रोकने की अनाधिकार चेष्टा करना शिवपुराण के आदेश के विरूद्ध चलना है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रणव पंचाक्षर मन्त्र का भाव यदि कोई प्रचलित, ''ॐ नमः शिवाय'' मन्त्र को ही ले लें तो भी प्रणव युक्त मन्त्र होने से ओङ्कार का जप भी तो साथ--साथ होता ही रहता है। इस प्रकार भी स्त्री और शूद्र प्रणवोपासक हो सकते हैं वैसे तो शिवपुराण में जहाँ प्रणव पंचाक्षर मन्त्र के माहात्म्य का उल्लेख है वहाँ केवल प्रणव को ही पूर्ण सामर्थ्यवान् निम्न शब्दों में बतलाया गया है :–

प्रणवेन प्रबुद्धस्तु शुद्ध योगमवाप्नुयात्।
शुद्ध योगेन संयुक्तो जीवन्मुक्तो न संशयः।।

अर्थात् प्रणव के द्वारा प्रबुद्ध हुआ मनुष्य शुद्ध योग को प्राप्त करता है और शुद्ध योग को प्राप्त हुआ मनुष्य जीवन्मुक्त दशा को प्राप्त होता है – इसमें संशय नहीं है। ज्ञानियों और गुरूजनों का यह कार्य है कि स्वंय सत्य का ग्रहण करें और दूसरों को भी सत्य–ग्रहण करने की प्रेरणा दें। महान् ही की कृपा से लघु जनों की उन्नति सम्भव है। अधम और पतितों का कल्याण करना धर्मात्माओं का कार्य है। इस सम्बन्ध में ऋग्वेद २।१३।१२ का मन्त्राँश इस प्रकार है :–

ॐ नीचा सन्तुमुदनयः परावृजं प्रान्धं श्रोणं श्रवयन्
त्सास्युक्थ्यः।

अर्थात् जो नीच हो गये हों उन्हें जो ऊपर उठाता है, सर्वथा त्याज्यों को अपनाता है, अन्धों को मार्ग बतलाता है तथा बहरों को सुनाता है ऐसा वह मनुष्य प्रसंशा के योग्य है। जो मनुष्य पाप में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पड़कर ज्ञान के प्रकश को नहीं देख पाते, जो कुसंगति में पड़कर हरिचर्चा नहीं सुनना चाहते, जो हर प्रकार निन्दनीय तथा त्याज्य हैं उन्हें पुन: सुधार कर ज्ञानचक्षु प्रदान करना प्रभुस्तुति श्रवण की कामना उत्पन्न करना तथा अत्यन्त गिरी दशा से ऊपर उठा लेना — यह महापुरूषों का ही कार्य है। इस वैदिक उपदेश को शिव–पुराण ने भी–''शूद्रो भवेद्द्विज:'' अर्थात् पवित्र होकर शूद्र भी द्विज हो सकता है इन शब्दों के द्वारा समर्थन किया है।

(२७) ओंकार जप का सबको समान अधिकार

प्रणव पञ्चाक्षर मन्त्र का जप समान रूप से सभी नर–नारी चाहे किसी जाति के क्यों न हों कर सकते हैं :– इसका इस प्रकार उपदेश है :–

नारी वाथ नरो वाथ ब्राह्मणों वान्य एव वा।
पूजया शिवभक्तस्य शिव: प्रीततरो भवेत्।।
शिवस्य शिवभक्तस्य भेदो नास्ति शिवो हि स:।
देवीलिङ्गं भवेद्रूपं शिवभक्त स्त्रियस्तथा।।

इन उपदेशों के भाव ये हैं — चाहे नारी हो चाहे नर हो, चाहे ब्राह्मण जाति का चाहे अन्य किसी जाति का ही क्यों न हो, शिव जी की भक्तिपूर्वक पूजा करने से उसे शिव जी का प्रेम प्राप्त हो जाता है क्योंकि शिव और शिव–भक्त में भेद नहीं है। स्त्रियाँ भी अपने को प्रणव पञ्चाक्षर मन्त्र के द्वारा शिव जी की पूजा करने से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

''देवीस्वरूप'' कर लेती हैं।

इस प्रकार शिवपुराण के अध्ययन से भगवान् शंकर के महान् तथा उदार अनुग्रह का पता चलता है। जब स्वयं भगवान् ही अपने भक्तों के प्रति इतने उदार हैं तो हमें सङ्कीर्ण होने की आवश्यकता नहीं है। भगवान् के द्वार तक सबको पहुँचने का अधिकार है। उसे स्वीकार अथवा अस्वीकार करना तो भगवान् का काम है क्योंकि हमारे अधीन किसी की सद्गति या मुक्ति नहीं है। हम भी तो भगवान् की ही कृपा की बाट देखते हैं ऐसी दशा में दूसरों को भगवत्कृपा की प्राप्ति करने के प्रयास से कैसे रोक सकते हैं ? बिना भेद–भाव के ''उदार शंकर'' सब पर ''शम्'' = कल्याण करने को जब तैयार हैं तो हमारे हाथ में उनके कार्यों को रोक देने का सामर्थ्य ही नहीं है। सम्पूर्ण पुराणों में पापियों के उद्धार के इतिहास भरे पड़े हैं। यदि अहङ्कार से कोई अपनी त्रुटियों की ओर न देखते हुए, दूसरों को ही नीच समझेगा तो यह अन्याय भगवान् सहन नहीं कर सकता क्योंकि वह अपनी सम्पदा जल, वायु, सूर्य, चन्द्र, अन्न, धन, सन्तान इत्यादि को बिना भेद–भाव के ही सभी सन्तों तथा पापियों को समान रूप से दे रहा है। भगवान् को केवल चाहिए ''भाव'' चाहे वह किसी जाति के शुद्ध हृदय की पुकार क्यों न हो! इसीलिए मनुष्य मात्र को भगवान् को पुकारने का अधिकार है जैसा कि निम्न वेद मन्त्र से प्रत्यक्ष है :–

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
ॐ यस्त्वा हृदा कीरिणा मन्यमानोऽमर्त्यं मर्त्यो जोहवीमि।

अर्थात् हम मरणधर्मा मनुष्य तुम अमर देव को स्तुतियुक्त पवित्र हृदय से पुकारते हैं। हे प्रभो! हमें मोक्ष प्रदान करो। जितनी आत्माएँ हैं उन्हें प्रणवोपासना के द्वारा शिव–धाम पहुँचने का पूर्ण अधिकार है – यह शिव–पुराण का निर्णय है।

(२८) सद्गुरू की प्राप्ति दुर्लभ है –

आज नाना प्रकार के प्रपंच उपासना के सम्बन्ध में भी फैल गये हैं। बहुत परिश्रम करने पर भी सद्गुरू की प्राप्ति शीघ्र नहीं होती परन्तु आज गुरू प्राप्त कर लेना ही सबसे सरल काम हो गया है। ईश्वर की सच्ची उपासना से लोग पृथक् होते जा रहे हैं। मनमानी पूजा, उपासना चलाई जा रही है। शिवपुराण में ही गुरू के सम्बन्ध में इस प्रकार का लेख है :–

गुरोरपि विशेषज्ञं, यत्नात् गृह्णीत वै गुरूम्।
अज्ञान मोचनं साध्यं विशेषज्ञो हि मोचकः।।

अर्थात् बहुत यत्न के द्वारा विशेष ज्ञानी गुरू को ढूढँकर ग्रहण करना चाहिए। गुरू ही अज्ञान का मोचन कर सकता है परन्तु गुरू का विशेष ज्ञानी होना आवश्यक है। अधुना विशेष ज्ञानी गुरू की बात ही क्या करनी है ? बहुत से गुरूओं को यह कहते सुना जाता है कि ओङ्कार की उपासना गृहस्थ के लिए नहीं हैं तथा इसकी उपासना से उपासक नष्ट हो जाता है इत्यादि। परन्तु शिवपुराण में प्रत्यक्ष ही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
प्रवृत्ति—मार्ग (गृहस्थ) को ''ह्रस्व—ओंकार'' तथा निवृत्ति—मार्ग (सन्यासी) के लिए ''दीर्घ—ओम्'' जपने का आदेश है। इसलिए गुरू स्वयम् स्वाध्यायशील तथा ज्ञानी बनकर ही अपने शिष्यों को सदोपदेश के द्वारा सन्मार्ग पर ला सकता है अन्यथा ''अन्धा गुरू और बहरा चेला'' वाली कहावत चरितार्थ होगी।

(२९) शिव—पुराण में ओङ्कारोपासना सम्बन्धी उपदेश का सारांश—

शिवपुराण के स्वाध्याय से संक्षेप में नीचे लिखी बड़ी ही महत्व की बातें सार—रूप में ग्रहण की जा सकती है :—

१. प्रणव = ओङ्कार की उपासना ही मुख्य उपासना है।

२. प्रणव और शिव में नाम—नामी का सम्बन्ध है। अत: अभेद है।

३. प्रणव के जप से शीघ्र ही मनुष्य शुद्ध होकर नाना प्रकार की सिद्धियों को प्राप्त कर लेता है तथा अन्त में मुक्त भी हो जाता है।

४. प्रणव के जप से चारों वर्णों के मनुष्य अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र उत्तरोत्तर उन्नति करके परमात्मा के भक्ति—विशेष के अधिकारी हो जाते हैं।

५. प्रणव जपने का अधिकार बिना किसी प्रकार के भेद—भाव के मानव मात्र को है।

६. प्रणव का जप गृहस्थ तथा संन्यासी दोनों करने के अधिकारी हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

७. प्रणव जप करने तथा शिव–पूजन करने का अधिकार स्त्रियों तथा शूद्रों को भी है।

८. प्रणव के जप से ब्रह्मा, विष्णु तथा रूद्र–पद की प्राप्ति हो सकती है।

९. ओङ्कार ही सम्पूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और लय का कारण है।

१०. ओङ्कार से ही त्रिदेव–ब्रह्मा विष्णु तथा महेश की उत्पत्ति हुई।

११. ओङ्कार ही "शब्द–ब्रह्म" होने से सबका आदि है।

१२. ओङ्कार ही सगुण तथा निर्गुण है अर्थात् ओङ्कार ही सब कुछ है।

१३. ओङ्कारोपासना के द्वारा मनुष्य माया तथा प्रपञ्च से मुक्त हो जाता है।

१४. ओङ्कार को शिव जी ने "मन्त्राधिराज" तथा "वीज–मन्त्र" कहा है।

१५. ओङ्कार नाम की दीक्षा के द्वारा काशी में मरने वालों को शङ्कर भगवान् परम–गति प्रदान करते हैं।

१६. ओङ्कार ही "सर्व–वेदादि" कहा गया है अन्य सभी मन्त्र इसी के द्वारा शुद्ध होते हैं।

१७. ओङ्कार के द्वारा ही शिव–पूजन में प्रथम न्यास करने का विधान शिव–पुराण में है।

१८. ओम् का जप मात्र ही शङ्कर जी की वास्तविक प्रदक्षिणा है।

१९. प्रणव–विद्या अत्यन्त उत्कृष्ट तथा कल्याणकारी विद्या है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२०. ओम् शब्द का अ, उ तथा म, क्रम से ब्रह्मा, विष्णु और महेश स्वरूप है।

२१. ओम् नाम की महिमा का गुण–गान जितना शिवपुराण में है उतना भगवान् के अन्य किसी नामों का नहीं है।

२२. ओम् का जो अर्थ और विवेचन शिव–पुराण में है वह बहुत अंशों में उपनिषदों के समान भी है।

२३. ओम् पूजन तथा जप की विधि शिव–पुराण से भी सीखी जा सकती है।

२४. ओम् मन्त्र का ही उपदेश शिव जी ने पार्वती जी को देकर दीक्षा दी थी इसलिए इस मन्त्र की अधिकारिणी अन्य स्त्रियाँ भी हैं तथा पति ही सभी स्त्रियों का उचित गुरू है – यह बात भी सिद्ध हो जाती है।

२५. ओम् की महिमा तथा गरिमा इसलिए अन्य सभी नामों से अधिक है कि यही शङ्करोक्त निज–नाम है जिसमें सदा शिव जी विराजमान हैं जैसा कि पार्वती जी का भगवान् शङ्कर ने इस प्रकार उपदेश दिया – "ओम् इति एकाक्षरे मन्त्रे स्थितत्वोऽहम् सर्वगः शिवः" अर्थात् हे देवि! सुनो! ॐ इस एकाक्षर वाले मन्त्र में ही मैं सर्व–व्यापक शिव स्थित हूँ।

२६. ओम् को जान लेना शङ्कर जी को जान लेने के समान है जैसा कि शङ्कर जी का उपदेश है : "प्रणवार्थ परिज्ञानम् एव ज्ञानं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मदात्मकम्'' अर्थात् ओङ्कार का ज्ञान ही मेरा ज्ञान है।

२७. परन्तु ओम् का ज्ञान सबको नहीं हो सकता यह तो केवल उसी को हो सकता है जिस पर भगवान् शङ्कर की असीम कृपा तथा प्रसन्नता हो जैसा कि शिवपुराण में निम्न वचन हैं :—

येषाम् प्रसन्नों भगवान् साक्षात् शूलकरायुधः।
तेषामेव शिवज्ञानं प्रणवार्थ प्रकाशकम्।।

अर्थात् त्रिशूलधारी शङ्कर जिस पर प्रसन्न होते हैं उन्हीं को प्रणव का अर्थ तथा शिव का ज्ञान होता है।

इस प्रकार शिवपुराण के स्वाध्याय के पश्चात् जो ओङ्कारोपासना सम्बन्धी अति आवश्यक तथा महत्वपूर्ण बातें थी उनको जनताजनार्दन के समक्ष उपस्थित कर दी गयीं। अब सभी नर—नारी शिवपुराण का सार—रूप ''ओङ्कार'' को ही समझ कर इस ॐ (एकाक्षर) का जप तथा उपासना करके शिव—धाम की प्राप्ति करें।

यही हार्दिक कामना है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महर्षि जी द्वारा लिखित पुस्तकों के नाम तथा मूल्य

क्रम	नाम	मूल्य
1.	हिन्दुस्तान में हिंसा और अहिंसा	(प्रतियां समाप्त)
2.	क्रिया-योग	5.00
3.	ओङ्कार-भजनावली (नये भजनों के साथ)	5.00
4.	सुख-दुःख	5.00
	ओङ्कार-वचनामृत	5.00
	शिवपुराण एवं ओङ्कारोपासना	20.00
	हम ओम् की उपासना क्यों करें ?	2.00
8.	परमलक्ष्य और उसकी प्राप्ति	20.00
9.	उपासना योग पर एक विचार	20.00
10.	प्रणव-पूजन-पद्धतिः	25.00
11.	प्रणव पञ्च मालिका	2.00
12.	नारी-अधिकार, गुण, गरिमा	15.00
13.	माया-मोह की कथा	2.00
14.	उत्तङ्क ऋषि की कथा	4.00
15.	वीर पिता का वीर पुत्र की कथा	5.00
	संक्षिप्त प्रणव-पूजन-पद्धतिः	4.00
	ईशोपनिषद् का सरल संक्षिप्त परिचय	5.00
	वेदों में पुरूष-सूक्त	10.00
19.	वैदिक गन्धर्व और अप्सराएँ	5.00
20.	प्रणव-पूजन-पद्धतिः की वृहद् व्याख्या	25.00
21.	गौरीशंकर राम.............ओङ्कार के उपासक थे	10.00
22.	एक महत्वपूर्ण पत्र का उत्तर	6.00
23.	वैदिक-देव शंकर वेदोक्त ओंकारोपासना के आदि शिक्षक हैं	5.00
24.	मैंने क्या देखा	5.00
25.	भ्रांति निवारण	5.00
26.	ओंकार चालीसा एवं ओंकार कवच	5.00
27.	संक्षिप्त उपनिषद-परिचय	12.00
28.	अथर्वेद का एक सरल संक्षिप्त अध्ययन	50.00
29.	ओम तथा शिव और कृष्ण	5.00
30.	क्या ओम् की पूजा शास्त्रों द्वारा प्रमाणित है ? (प्रवचन)	2.00
31.	महर्षि ओंकारानन्द जी की संक्षिप्त जीवन झाँकी	5.00
32.	वैदिक उपदेश	10.00

ज्ञातव्य : हमारे यहां धार्मिक जनों की सुविधा के लिए - (1) ॐ की प्रतिमा (2) रूद्राक्ष की माला (3) ओमशङ्कर भगवान का फोटो बिक्री करने की भी व्यवस्था की गई है।

पता : महर्षि ओंकारानन्द प्रणव-मन्दिर समिति, प्रकाशन-विभाग, ओङ्कार-आश्रम
ग्राम - वैजनाथपुर, पत्रालय : बालापार - गोरखपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.